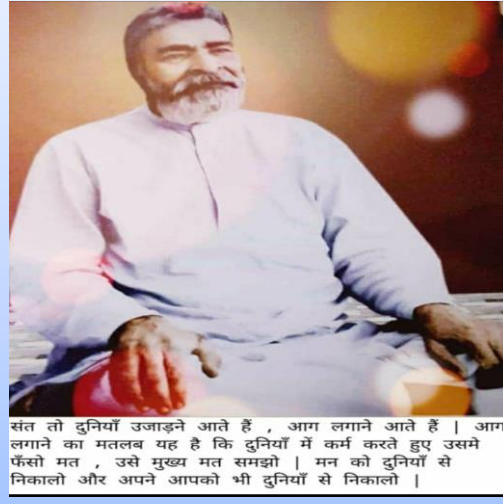
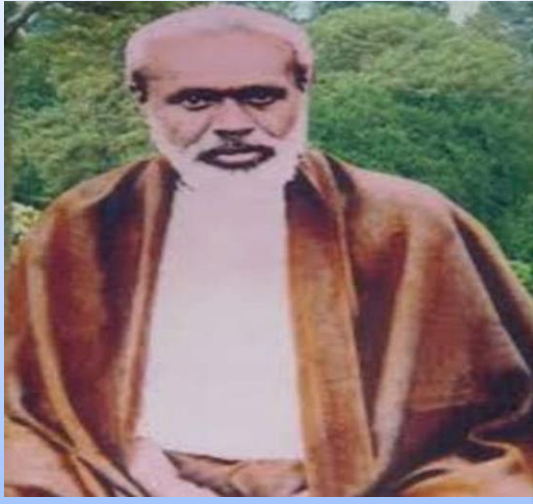


रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन



अमृतोपदेश



रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद(रजि.), उ०प्र०

रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन

(परम पूज्य महात्मा रामचन्द्र जी (लालाजी)
महाराज, महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज
एवं महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज के
चित्रमय लघु उपदेश)



प्रकाशक
आचार्य एवं अध्यक्ष,
रामाश्रम सत्संग (रजि.)
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)

नवंबर - 2022



पीर से उल्फत हो मुझको और बनूँ
उनकी मुराद
'राम' के 'श्रीकृष्ण' की अनुपम दया
के वास्ते



हे प्रभु! निज प्रेम देकर सबके दुख

हर लीजिए!

'श्रीकृष्ण' के 'करतार' की अविरल

क्रपा के वास्ते!



प्रेम हो श्रीकृष्ण का और नूर हो

करतार का!

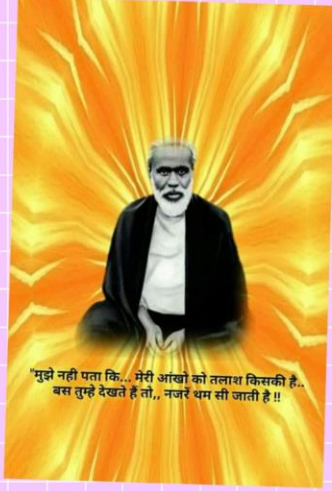
सत्कार श्री गुरु का करें शक्ति - क्रपा

के वास्ते!!



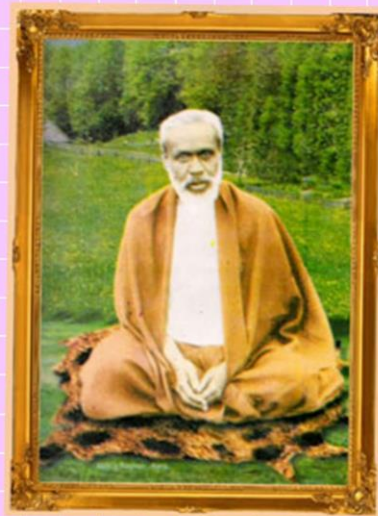
माया के वास्तव में तीन गुण हैं - सत,
रज और तम! सत में मै और मेरेपन
के भान के अस्तित्व का गुण है,
इसको प्रकाश, आनंद, ग्यान वगैरह
कह सकते हैं! रंग देने को रज कहते
हैं - यह रजोगुण विभिन्न रंग
देने (रूप प्रकट करने) का ही गुण
है! इसमें हर तरह के कर्म, विचार,
क्रियाशीलता, चेष्टा आदि को शामिल
कर सकते हैं! तम अंधकार है - इसमें
सुस्ती, आलस्य, मूढ़ता असहाय से
पड़े रहने आदि के गुण शामिल हैं!

परमसंत महात्मा रामचंद्र जी महाराज



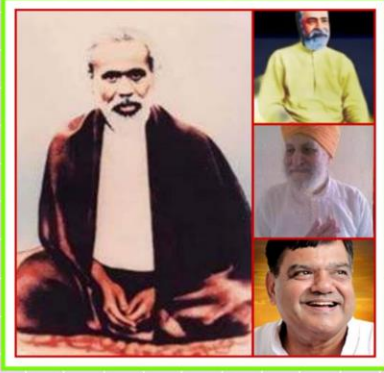
संत मत में शुरू में सत्संग के वक्त
मुर्शिद (गुरु) के चहरे पर तीनों
भौहों के दरम्यान नज़र जमाने का
इशारा किया जाता है! यह बाहरी
शक्ल की तरफ़ इशारा है! लेकिन
अन्दर की तरफ़ अभ्यास करने के
लिए खास मुकाम और जगह बताई
जाती है, जो ज़रूरत के वक्त और
मौक़े पर उसकी तरक़ीब के साथ
साधक को बताई जाती है!

परमसंत महात्मा रामचंद्र जी



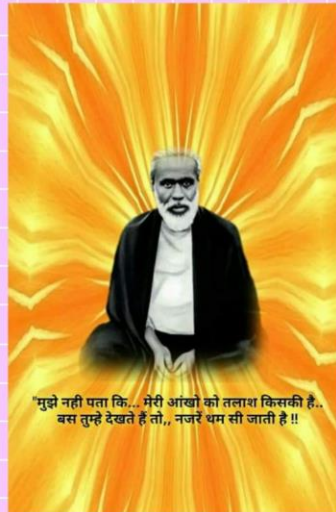
बगैर एक गुरु की मदद से रूहानियत
(आध्यात्म विद्या) का प्राप्त करना
आसान काम नहीं है! माँ अगर न हो
तो बच्चे का इशक़ पुख़्ता कैसे हो?
उस्ताद अगर न हो तो शागिर्द
(विद्यार्थी) में पुख़्तगी (परिपक्वता)
कैसे आवे? इसी तरह अगर
रूहानीयत (आध्यात्म विद्या) का गुरु
न हो तो इल्म रूहानीयत (आध्यात्म
विद्या) कैसे नसीब हो? यहाँ तो
कदम - कदम पर सहारा लेने की
ज़रूरत है!

परमसंत महात्मा रामचंद्र जी महाराज



सब कुछ उसके सुपुर्द कर दो और
उसका कोई एक गुण दृढ़ता से
अपना लो. आहिस्ता-आहिस्ता
उसके सब गुण तुम्हारे अन्दर आ
जायेंगे. दुःख-सुख से ऊपर हो
जाओ. हर हालत में खुश रहो.
मालिक परमानन्द है. वह सबों का
पालन-पोषण करता हुआ हमेशा
आनन्दित रहता है. तुम भी सब कर्म
करते हुए खुश रहो. उसके सब गुण
तुममें समा जायेंगे.

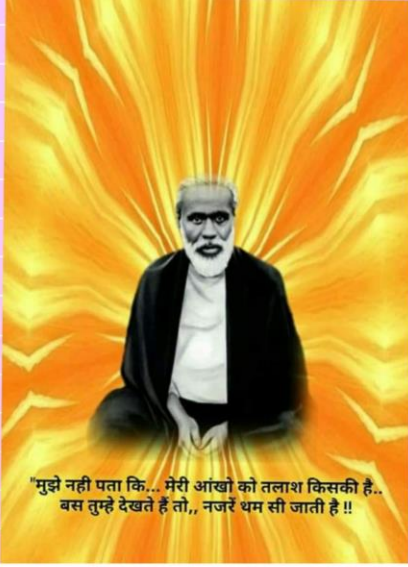
राम संदेश - मई 1967



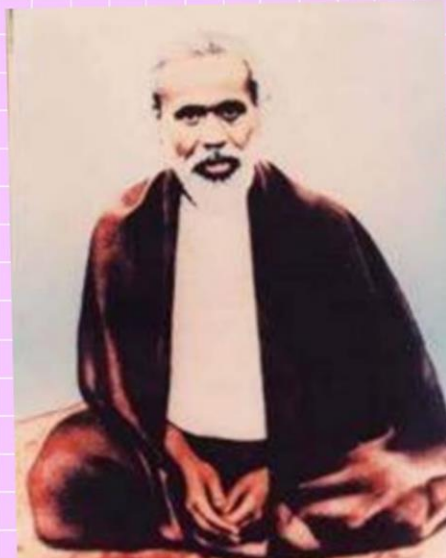
'मुझे नहीं पता कि... मेरी आंखों को तलाश किसकी है...
बस तुम्हें देखते हैं तो.. नजरें धम सी जाती हैं !!

मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार - ये
प्रकृति के चार तत्व हैं! सतपुरुष का
स्वरूप इन तत्वों से नहीं बना है,
बल्कि वह शुद्ध चैतन्य स्वरूप है!
चेतना भी एक तत्व है जो कि इन
तत्वों से भिन्न है! वह ग्यान तत्व
कहलाता है! ग्यान से मतलब बाह्य
ग्यान नहीं है! जिस तरह दीपक के
प्रकाशित होते ही प्रकाश और
अंधकार अलग हो जाते हैं, वैसे ही
जिस समय असल भंडार में मौज
उठती है तो चेतन अलग और माया
अलग हो जाते हैं!

(हिंदी में रूपांतरित)



मुर्शिद या गुरु की मिसाली शकल,
उसकी हरकात, ईखलाक और आदत
(रहनी - सहनी, चरित्र व स्वभाव)
की तरफ नज़र रखना, याद क्रायम
रखना, उसका ध्यान बांधना वगैरा
सूफियों और संतमत के अभ्यसियों
और साधकों के यहां का शगल है!
इसको शगल राब्ता (गुरु का ध्यान)
भी कहते हैं और बरज़ख पीर (बीच
का गुरु) भी इसका
इस्तलाही (पारिभाषिक) नाम है!
चित्त को एकाग्र करने के लिए यह
अमल ऐसा पुरतासीर (प्रभावशाली
शक्ति से भरा हुआ) है कि जादू की
तरह अपना क्रिश्मा दिखाता है,
बल्कि और रास्तो से यह रास्ता क़रीब
और काम को सहज कर देता है!



बाज़ तरीके के बुजुर्ग (गुरु लोग)
शगल राब्ता (गुरु की शकल का
ध्यान) का उस वक्त तक हुक़म नहीं
देते जब तक यह नहीं देख लेते हैं कि
साधक में प्रेम का झरना उछल पड़ा है
या मोहब्बत का जज़्बा भड़क उठा है,
उसको ऐसी उमंग आई हुई है कि बिना
कहे और सुने ख़ामखाह वह शक़ल
को सामने रखने लगा है! अगर ऐसा
घेरा मुहब्बत का हो जाय कि शक़ल
दूर करने से भी न हटे तो यह कुदरत
का ताक़ाज़ा है और लहर का रुख
बहाव की तरफ़ है, वरना ज़बरदस्ती
शक़ल को सामने क्रायम करना एक
तरह का हट है जो मूर्ति पूजन की हद
में आ जाता है!



पीर से उल्फत हो मुझको और बनूँ

उनकी मुराद

'राम' के 'श्रीकृष्ण' की अनुपम दया
के वास्ते

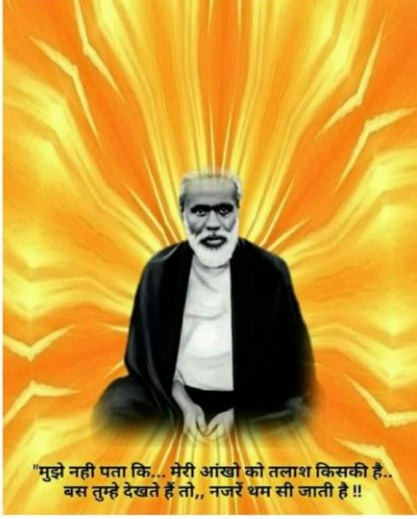
पूज्य डॉ. बी. के. सक्सेना

जी

आन्तरिक सत्संग में बैठ कर हमको
चाहिए कि दिल को हाज़िर रखकर
अपने मनोआकाश को सतगुरु के
प्रेम की धारों से संतृप्त करें और सुरत
को ऊपर उठने दें. इस तरह अपनी
सुरत गुरु की तवज्जह की धार से
पूर्णतया मिला दें तो इसी का नाम
सच्चे मायनों में योग है - बाकि सब
अभ्यास योग साधन है जिनको
सत्संग के समय करने की मुख्यता
नहीं है.



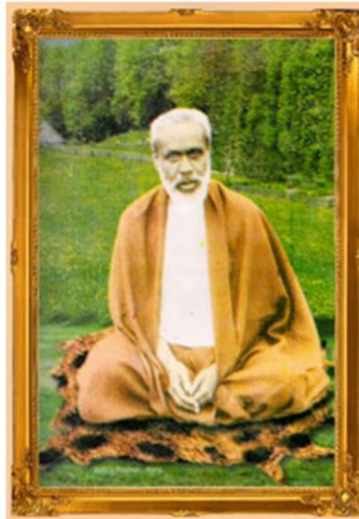
सच्चे जिज्ञासु का एक महान गुण है - कृतज्ञ
होना! वो भाग्यशाली है जिसको यह मनुष्य चोला
मिला है! हम लोग परमात्मा से मिले इस उपहार के
प्रति कृतज्ञ नहीं होते - इसका सदुपयोग नहीं करते!
शरीर के साथ इंद्रियाँ भी है! शरीर हमें मिला है कि
हम साधना करें, अपनी आत्मा को परमात्मा में
विलय कर दें, ताकि हम जन्म-मरण के चक्कर से
हमेशा - हमेशा के लिये मुक्त हो सकें! परन्तु हम
इस दुनियाँ के नश्वर - मायावी आकर्षणों में, इंद्रिय
भोगों में, फँस जाते हैं और अपने जीवन के परम
लक्ष्य 'ईश्वर प्राप्ति' को भूल जाते हैं! हम इन्द्रियों के
सुख में इतने फँस जाते हैं कि अपने परम लक्ष्य,
परम कर्तव्य को ही भूल जाते हैं! हमें अपने कर्तव्य
के प्रति सचेत होना चाहिये, जागरूक रहना चाहिए!
(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



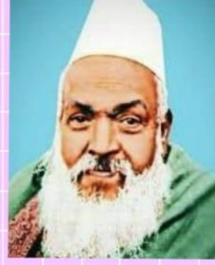
"मुझे नहीं पता कि... मेरी आंखों को तलाश किसकी है..
बस तुम्हें देखते हैं तो,, नजरें थम सी जाती है !!

ईश्वर प्राप्ति का निश्चित साधन

- 1- जिक्र खफी का जाप (दिल का जाप) किया करें!
 - 2- नर्जिस, गैर आदमी और गैर सौहबत के नक्राओं से दिल को साफ़ रखें!
 - 3- परमात्मा के सिवाय किसी तरफ़ तवज्जो न करें!
 - 4- यकसूई और एकाग्रता के साथ दिल हाज़िर रखने का पक्का इरादा करें!
 - 5- सत और मालिक की तरफ़ उनसियत और लगाव हासिल करें!
 - 6- अपने आप को मेट कर उसी में महब और लय हो जाएँ!
 - 7- इसी काम में अपने आपको मेट दें!
- सबसे ज़्यादा नज़दीकी रास्ता और असल पद पर पहुंचने का यकीनी ज़रिया है!



हे परमपिता परमेश्वर ! यह सेवक जैसा है तैसा आपकी शरण में मौजूद है. इसको ख़बर नहीं कि आपके गुण कैसे गाये जावें ? कभी-कभी बाख़बरी पर नाज़ हो जाता है, लेकिन जब काम का वक्त आता है तब धरे का धरा रह जाता है. अब तक छान-बीन करने का यह नतीज़ा निकला और यह जान पाया कि कुछ नहीं जाना."



या इलाही फ़ज़ल से दे मुझको फ़ज़ले अहमदी !

'राम' फ़ज़ली और

रघुवर बाअता के वास्ते !!

(परमसंत महात्मा रामचंद्र जी, फतेहगढ़ी

एवं तस्य अनुज महात्मा रघुवर दयाल जी

,कानपुर)

हे प्रभु ! संत सतगुरु रामचंद्र जी महाराज एवं

उनके भाई संत रघुवर दयाल जी के वास्ते मुझे

अपनी फ़ज़ल और दया प्रदान कीजिये



परमात्मा की क़्रपा हर एक चीज़ पर
हर समय हो रही है और एक - सी हो
रही है! फ़र्क सिर्फ़ महसूस और ग़ैर -
महसूस का है! जिसने अपने बर्तन
यानी मन को साफ़ कर लिया है और
कोई अपवित्रता उसमें नहीं है, उस पर
उसका असर ज़्यादा है और जिसके
अंदर मैल भरा हुआ है और उसके
कारण फ़ैज़ को क़बूल नहीं करता उस
पर उसका असर या तो बिलकुल नहीं
या कम है! सूरज की रोशनी सब पर
एक सी पड़ती है और वह सबकी
जान है! लेकिन उसका असर सब पर
अलग-अलग है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी

महाराज



अपना पुरुषार्थ और कोशिश और
गुरु का बताया हुआ तरीका मन को
हल्का करता है जो आत्मा को दबाए
हुए है! गुरु की सौहबत आत्मा को
शक्ति देती है जो दबी हुई है!

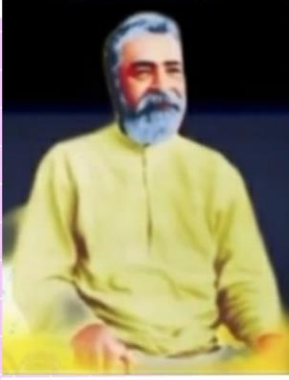
आहिस्ता आहिस्ता कुछ दिनों के
बाद देवसुर संग्राम या संघर्ष जारी हो
जाता है और अगर गुरु का सत्संग
मिलता रहा और अभ्यास जारी रहा
तो आत्मा ऊपर आ जाती है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



तकलीफें हमारे खुदा (प्रभु) का
निमंत्रण है, जुबा (जिह्वा) पर
शिकायत का लफ़्ज (शब्द) भी नहीं
आना चाहिए! मज़बूरी से भोगना भी
कोई भोगना है! उसे खुशी से भोगना
चाहिए और अपने प्रीतम का तौहफ़ा
(उपहार) समझना चाहिए! उसमें
वही आनंद लेना चाहिए जो आनंद
अपने दुनियावी (सांसारिक) माशूक
(प्रियतम) के लिए, दुनियावी सुख
के लिए लेते हैं!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज.

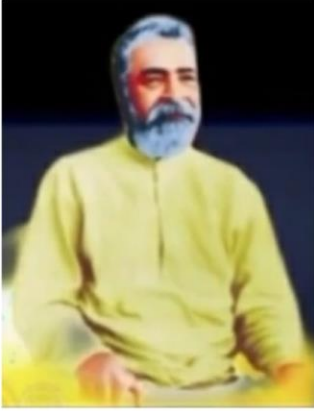


हमारे यहाँ गुरु क्रपा पर अधिक भरोसा किया जाता है, यह प्रेम का मत है! गुरु सदा ईश्वर प्रेम के आनंद में मग्न रहते हैं! यदि आपका उनके साथ प्रेम होगा तो उसके साथ - साथ उनकी आत्मा का प्रकाश भी आपके पास पहुँच जाएगा! जब गुरु अपना दिल ईश्वर प्रेम से भर लेता है और लगातार चौबीसों घंटे भरता ही रहता है तो वह भीतर से इतना लबालब हो जाता है कि छलकने लगता है और जो वातावरण उसके चारों तरफ़ होता है उसे तर कर देता है जिसका प्रभाव वहाँ बैठे लोगों पर पड़ता है और वे भी शान्ति तथा ईश्वर प्रेम का अनुभव करते हैं!



परमात्मा की क्रपा हर एक चीज़ पर हर समय हो रही है और एक - सी हो रही है! फर्क सिर्फ़ महसूस और गैर - महसूस का है! जिसने अपने बर्तन यानी मन को साफ़ कर लिया है और कोई अपवित्रता उसमें नहीं है, उस पर उसका असर ज़्यादा है और जिसके अंदर मैल भरा हुआ है और उसके कारण फ़ैज़ को क़बूल नहीं करता उस पर उसका असर या तो बिलकुल नहीं या कम है! सूरज की रोशनी सब पर एक सी पड़ती है और वह सबकी जान है! लेकिन उसका असर सब पर अलग-अलग है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



जीवन सुख से बिताने का तरीका यह है कि जो कर्तव्य ईश्वर ने तुम्हारे सुपुर्द किया है उसे पूरा करो और कोई आशा किसी से न रखो! ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो और उसी से प्रेम करो, तभी सुख मिल सकता है, वरना हमेशा दुखी रहोगे!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



1. सत्य बोलना और हक - हलाल (ईमानदारी) की कमाई पर गुजारा करना बहुत बड़ी तपस्या है! अगर इसी को कोई अंत तक निभा ले तो यह अकेला ही भवसागर से पार कर देगा!

2. दीन और दुनियां (लोक और परलोक) दोनों को निभाना है! दिखावे के लिए संसार से वास्ता रखो और अंदर से धीरे - धीरे सबसे अलग हो जाओ! उस परमात्मा पर भरोसा रखो, वह सब कुछ देखता है! जब समय आएगा, सब काम हो जाएंगे!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



हमारे सिलसिले की निसबत
(आत्म-सम्बंध) माशूकाना है, इसमें
पहले मुर्शिद (गुरु) को प्रेम पैदा
होता है और फिर मुराद (शिष्य) को,
और दोनों मिलकर एक हो जाते हैं!
यही असली तालीम है, यही प्रेम मार्ग
है! जितनी उसमें कमी रहती है उतनी
ही कमी तालिब (जिज्ञासु) में रह
जाती है! अगर दोनों मिलकर एक हो
जायें तो सिर्फ नाम के लिए फ़र्क रह
जाता है! उसी को निसबत (अंतरिक
संबंध) की मज़बूती कहते हैं! यही
सच्चा प्रेम मार्ग है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



जब मनुष्य दुनिया की चीज़ों को
आहिस्ता- आहिस्ता भोग कर यह
जान लेता है कि इनमें असली सुख
नहीं है, यह दुनिया रहने की जगह
नहीं है, तब वह तम से हट कर सत
की तरफ मुड़ता है! तुम भी सत पर
आ जाओ! उस मालिक पर विश्वास
करो, उसकी शक्ति के साथ एवं
प्रकृति माता के साथ सहयोग करो!
घर के लोगों को खिलाने - पिलाने
आदि के दुनियावी फरायज पूरा करने
का काम तुम्हें सौपा गया है, उसे
उसकी सेवा समझ कर पूरा करो!
हुकूमत तो सिर्फ मालिक की होती है
और मालिक सिर्फ एक ही है - वह है
परमात्मा!



तक्रलीफें बहतरी (कल्याण) के लिए आती हैं! ईश्वर को जिसका उद्धार मंज़ूर होता है, उस पर शुरू - शुरू में तक्रलीफें आती हैं! इनसे आत्मा का मैल धुलता है! तक्रलीफों से पुराने संस्कारों का बदल हो जाता है! आत्मा को दूसरा सबक्र (पाठ) तक्रलीफों से मिलता है! तक्रलीफों

का स्वागत करना चाहिए!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी



निन्दा अपने एबों (दोषों) की की जाती है! कभी भूलकर भी अपनी निन्दा मत करो! तुम तो ईश्वर के अंश हो, तुम में बुराई कैसी? अगर तुम बुरे हो तो वह भी बुरा है और जब वह गुणों का भण्डार है तो तुम बुरे कैसे हो सकते हो? निन्दा भी सिर्फ़ शुरू में की जाती है कि तुम पाक साफ़ हो जाओ और जब तुम पवित्र बनने लगो, तो अपने आप को सराहो और उस गुरु या मालिक को धन्यवाद दो जिसने तुमको अपनी शरण में ले लिया!



तकलीफें हमारे खुदा (प्रभु) का
निमंत्रण है, जुबा (जिब्हा) पर
शिकायत का लफ़्ज (शब्द) भी नहीं
आना चाहिए! मज़बूरी से भोगना भी
कोई भोगना है! उसे खुशी से भोगना
चाहिए और अपने प्रीतम का तौहफ़ा
(उपहार) समझना चाहिए! उसमें
वही आनंद लेना चाहिए जो आनंद
अपने दुनियावी (सांसारिक) माशूक
(प्रियतम) के लिए, दुनियावी सुख
के लिए लेते हैं!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज.



और मतों में मन और इन्द्रियों के दमन
के लिए साधक अपना बल लगाते हैं,
जिससे आपा पुष्ट होता है, अहंकार
बढ़ता है! संतमत में अपना पौरुष
छोड़ना पड़ता है और अपने मन को
निर्बल और अधीन समझना होता है!
अहंकार विकारों की जड़ है और
संतमत में इसी अहंकार को काट
दिया जाता है! समर्थ गुरु उसके सिर
पर दया का हाथ रखते हैं और उसके
कर्म काटते हैं! तब उसको विश्वास
होता है कि जो कुछ होता है सब
सद्गुरु की मौज से होता है और
सद्गुरु ही कर्ताधरता है! इससे
अहंकार पुष्ट नहीं होता, पिछले कर्म
कटते हैं और आगे के लिए कर्मों का
सिलसिला बंद हो जाता है!



सतगुरु खोजो,

उनकी शरण करो, अपने आपको
उनके समर्पण कर दो उनके आदेशों
का पालन करो, मन को वश में करो,
सत पर चलो, सत ही तुम्हारा स्वभाव
हो जाये तो एक न एक दिन सतगुरु
की दया से तुम मालिक के दरबार में
प्रवेश पा पाओगे, जहाँ प्रेम ही प्रेम
है, आनंद ही आनंद है और अमर
जीवन है!



पहले गुरु को ईश्वर का रूप समझो
और अपने आपको उसमें लय कर
दो! और जब आदिपुरुष के दर्शन हो
जावें जो उस गुरु में निवास करता है,
तो फिर ईश्वर ही गुरु नज़र आने
लगेगा! पहले सगुण ईश्वर की
उपासना गुरु - रूप में की जाती है
और उसके द्वारा गुरु में लय हो जाने
पर ईश्वर दर्शन निर्गुण रूप में होते हैं!

साँस खाली जा रही है, सुनहरा मौका
खो रहे हो!



क्या इसका अफ़सोस नहीं है? मनुष्य
जन्म और संत मिलन बार बार नहीं
होता! इस वक्त को गनीमत जानो
और लग लिपट कर अपना काम बना
लो!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी



संत के पास बैठकर आनन्द का
अनुभव होता है! अगर सौभाग्य से
ऐसा कोई वक्त का पूरा संत मिल
जाय तो वही गुरु है! वह तुम्हें
भवसागर से पार करने आया है!



उससे प्रेम करो!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी

महाराज

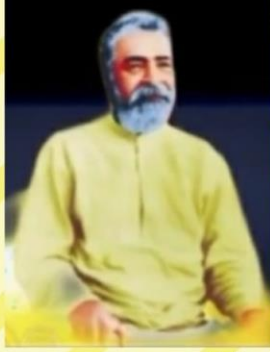


महात्मा डॉ श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज

सतगुरु की सहायता के बिना किसी की ताकत नहीं जो मन को जीत सके! मनुष्य निर्बल और बेबस है! उसकी सामर्थ्य नहीं कि कुछ भी कर सके! जो कुछ होता है परमात्मा की दया और मौज से होता है! सिवाय सदगुरु के और किसी की ताकत नहीं है कि मन को सुधार सके! प्रेमीजन अपनी सफाई और अच्छाई जो सदगुरु के सत्संग से प्राप्त होती है, अपना भाग्य सराहते हैं कि कोई पिछला भाग्य उदित हुआ है जिसके कारण सदगुरु की शरण में आया हूँ और मेरी इस दुष्ट मन से रिहाई हो रही है, नहीं तो कुछ पता नहीं लगता कि कहाँ जा रहा हूँ! जिन्होंने सदगुरु की शरण ले ली उनका बेड़ा पार हो जायेगा!

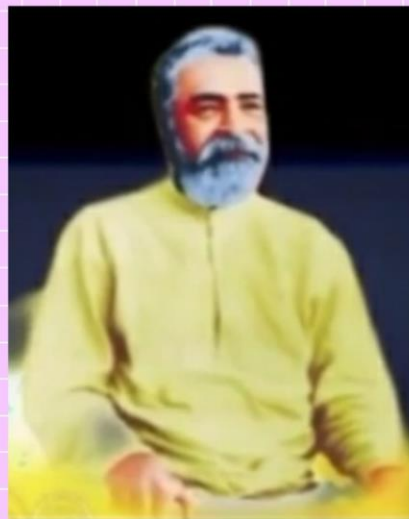


जिसने जितना अपने दिल को दुनियां की वासनाओं से साफ़ कर लिया है और परमात्मा के प्रेम का उत्सुक है उतना ही उसको ज़्यादा फ़ायदा महसूस होता है! लिहाज़ा अभ्यासी को हमेशा, हर समय अपनी वासनाओं पर ख़याल रखना चाहिए! जितना वह खुदगारजी (स्वार्थ) को छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए कोशिश करेगा उतना ही सदगुरु या परमात्मा के प्रेम का अधिकारी होगा और उतना ही उसका परमार्थ बनता चलेगा!



जो भी काम करो, अगर उसका फल
मालिक की मौज पर छोड़ दोगे तो
बंधन नहीं होगा! कर्म करते हुए
अकर्ता हो जाओगे! संचित कर्म धीरे
धीरे कट जाएंगे! भविष्य के लिए कर्म
भार नहीं चढ़ेगा यानी क्रियमान कर्म
नहीं लगेंगे और प्रारब्ध कर्मों का जोर
भी बहुत कम हो जायेगा!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी



राज्ञी - ब - रज्ञा चार किस्म की
होती है! मज्ञबूरी से किसी चीज़ को
बरदाश्त करना, सबसे नीचे की
राज्ञी - ब - रज्ञा है! इससे ऊँची यह
है कि यह ख्याल करके बर्दाश्त करे
कि बड़ी भारी तकलीफ आने की
थी पर ईश्वर की कृपा से वह छोटी
शकल में आकर रह गई! यह दूसरे
दरज्ञे की है जो पहले से बेहतर है!
तीसरे दरज्ञे की राज्ञी - ब - रज्ञा में
यह ख्याल रहता है कि इस हालत में
हो जाने से हमारे संस्कार कट रहे हैं
और हमें परमात्मा की नज़दीकी
प्राप्त होगी! इसलिए रूहानी फ़ायदे
को मद्देनज़र रख कर उसको खुशी
से बर्दाश्त करते हैं! चौथे दरज्ञे की
और सबसे उत्तम राज्ञी - ब-रज्ञा यह
है कि आयी हुई तकलीफ को अपने
प्रियतम परमेश्वर की तरफ़ से आयी
हुई सौगात समझ कर बर्दाश्त करते
हैं, किसी फ़ायदे पर निगाह नहीं
होती!



तकलीफें बहतरी (कल्याण) के लिए आती हैं! ईश्वर को जिसका उद्धार मंजूर होता है उस पर शुरु- शुरु में तकलीफें आती हैं! इनसे आत्मा का मैल धुलता है! पुराने संस्कारों का बदल हो जाता है! आत्मा को दूसरा सबक (पाठ) तकलीफों से मिलता है! तकलीफों का स्वागत करना

चाहिए!

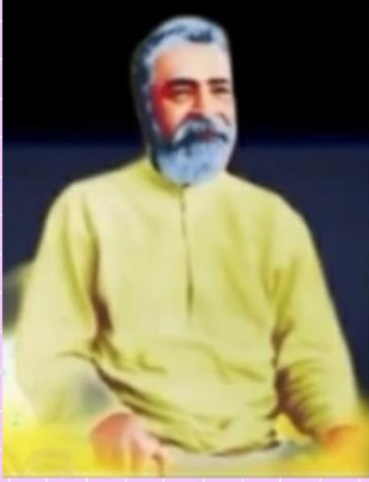
महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



गुरु क्रपा तब तक होती है जब तक हम गुरु के कहने में चलते हैं वरना वह क्रपा जाती रहती है!

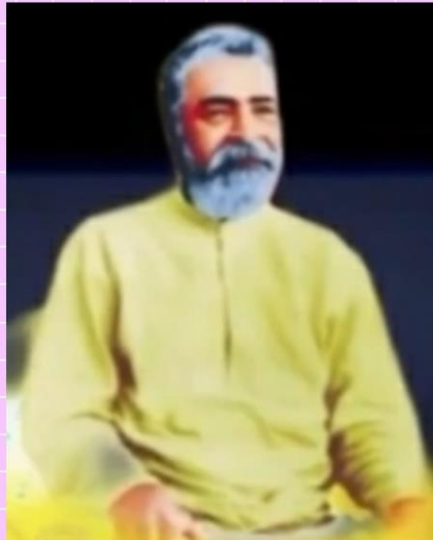
असली सत्संग यह है कि सदगुरु की वाणी को याद रखे और उनके आदेशों पर चलने का प्रयत्न करे! ईश्वर उनकी सहायता करता है जो स्वयं पुरुषार्थ करते हैं और उसकी ओर चलते हैं!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी

सतगुरु खोजो, उनकी शरण करो,
अपने आप को उनके समर्पण कर
दो, उनके आदेशों का पालन करो,
मन को वश में करो, सत पर चलो,
सत ही तुम्हारा स्वभाव हो जाये, तो
एक न एक दिन सतगुरु की दया से
तुम मालिक के दरबार में प्रवेश पा
जाओगे, जहाँ प्रेम है, आनंद ही
आनंद है और अमर जीवन है! ऐसा
जीवन पाकर इस भवसागर में आना
नहीं होता, आवागमन छूट जाता है!



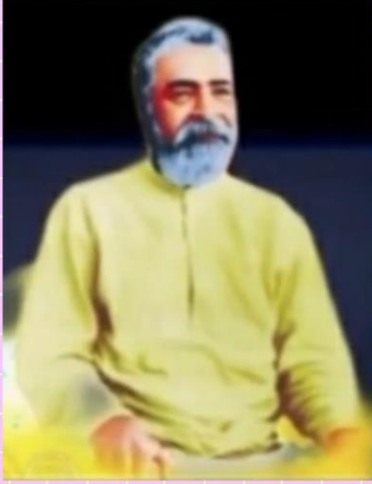
सतगुरु की सहायता के बिना किसी
की ताकत नहीं जो मन को जीत
सके! मनुष्य निर्बल और बेबस है!
उसकी सामर्थ्य नहीं कि कुछ भी कर
सके! जो कुछ होता है परमात्मा की
दया और मौज़ से होता है! सिवाय
सदगुरु के और किसी की शक्ति नहीं
है कि मन को सुधार सके! प्रेमीजन
अपनी सफाई और अच्छाई, जो
सदगुरु के सत्संग से प्राप्त होती है,
देखकर अपना भाग्य सराहते हैं कि
कोई पिछला भाग्य उदित हुआ
जिसके कारण सदगुरु की शरण में
आया हूँ और मेरी इस दुष्ट मन से
रिहाई हो रही है! जिन्होंने सदगुरु की
शरण ले ली है उनका बेड़ा पार हो
जाएगा!



परमगुरु परमात्मा को कहते हैं!
 देहधारी गुरु का सहारा लेकर सदगुरु
 यानी शब्द और प्रकाश तक पहुँचाते
 हैं! शब्द और प्रकाश का सहारा
 लेकर साधक में प्रेम उत्पन्न हो जाता
 है! इसके बाद परम गुरु यानी
 परमात्मा के देश में पहुँच जाते हैं!
 यानी ॐ का ख्याल आने लगता है
 और चारों गतियों यानी सालोक्य,
 समीप्य, सारूप्य और सायूज्य, से
 गुजर कर उससे मिलकर एक हो जाते
 हैं! इन्हीं जीवन मुक्त आत्माओं को
 आध्यात्मिक गुरु कहते हैं! इनकी
 सौहबत में बैठने, इनके वचन सुनने
 से, इनका ख्याल करने से आहिस्ता
 आहिस्ता मन - बुद्धि के पर्दे कट
 जाते हैं! आत्मा अपने असली रूप में
 ज़ाहिर होती है, परमात्मा का प्रेम दिन
 पर दिन बढ़ने लगता है और जिज्ञासु
 एक दिन अपने प्रीतम से मिलकर
 एक हो जाता है!



ईश्वर क्रपा बहुत नाज़ुक है! वह
 विरोध बर्दाश्त नहीं करती! ज़रा सा
 विरोध होने पर अन्दर को गुम हो
 जाती है! इसलिए मन जब तक
 इन्द्रियों में फँसा रहता है, उसमें
 इच्छाएँ, वासनाएँ रहती हैं और वह
 तरंगें उठाता रहता है, उस वक्त तक
 ईश्वर क्रपा गुप्त रहती है! जब मन
 शांत होकर सत पर आ जाता है तभी
 ईश्वर क्रपा काम करती मालूम होती
 है! इसके पहले ईश्वर क्रपा नहीं
 होती!



महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी

सतगुरु खोजो, उनकी शरण करो,
अपने आप को उनके समर्पण कर
दो, उनके आदेशों का पालन करो,
मन को वश में करो, सत पर चलो,
सत ही तुम्हारा स्वभाव हो जाये, तो
एक न एक दिन सतगुरु की दया से
तुम मालिक के दरबार में प्रवेश पा
जाओगे, जहाँ प्रेम है, आनंद ही
आनंद है और अमर जीवन है! ऐसा
जीवन पाकर इस भवसागर में आना
नहीं होता, आवागमन छूट जाता है!



गुरु और शिष्य दोनों में दो बातों का
होना बहुत ज़रूरी है. गुरु में - (1)
सच्चा गुरु हो यानी जिसने परमात्मा
के चरणों में हमेशा के लिए जगह पा
ली हो ! (2) वह बेगरज हो यानी
शिष्य की सिवाय आत्मिक उन्नति के
कुछ न चाहता हो ! शिष्य में - (1)
शिष्य को यह पक्का विश्वास हो कि
जो कुछ गुरु कहता है उसी पर चलने
में उसकी भलाई है, चाहे सख्ती हो
या नरमी, दोनों अवस्थाओं में गुरु में
दृढ़ विश्वास रखे ! (2) उसको गुरु
से सच्ची प्रीति हो यानी उसके हृदय
में सिवाय गुरु के प्रेम के कोई दूसरी
चाह न हो और यदि हो भी तो वह
सिर्फ अपने उद्धार की हो ! गुरु में
अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पण
और लय कर चुका हो !



एक प्रेम के नाते को छोड़कर और मैं किसी नाते को नहीं जानता! केवल प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम! जो लोग बिना अपने स्वार्थ के मुझे प्रेम करते हैं, चाहे वे सज्जन है या दुष्ट, मैं उन्हें प्रेम करता हूँ! वे मेरे हैं और मैं उनका! वे सदैव मुझ पर आश्रित रह सकते हैं और वे देखेंगे कि मैं सदैव उनकी सेवा के लिए प्रस्तुत हूँ!

--महात्मा श्रीकृष्ण लाल जी महाराज



दीनता संतों के चरणों में बैठने से प्राप्त होती है ! संत इतने दीन होते हैं कि उनमें बड़प्पन लेशमात्र भी नहीं होता ! वे बच्चों की तरह भोले-भाले होते हैं ! यदि हम बराबर उनसे सम्पर्क रखें, उनकी सेवा करें, उनके चरणों में बैठें, तो उनके स्वभाव का हम पर भी प्रभाव पड़ेगा ! उनके से गुण हम में आने लगते हैं, दीनता आने लगती है ! चन्दन के पेड़ों का असर आसपास के पेड़ों पर भी पड़ता है, उनमें भी खुशबू आने लगती है !



गुरु धारण कर लेने के बाद सत्संग में शामिल होने पर जो चीज़ गुरु से मिलती है उसकी रक्षा नितांत आवश्यक है! इसलिए शुरु में किसी दूसरे सत्संग में जाने या गुरु के अतिरिक्त किसी अन्य साधु महात्मा के दर्शन इत्यादि की आग्या नहीं देते! यही हाल शुरु शुरु में सतसंगी का होता है! गुरु अपनी इच्छा शक्ति से उसके मन में परमात्मा की भक्ति और प्रेम के अंकुर उत्पन्न कर देता है! दूसरे के सत्संग में जाने से इस ईश्वर प्रेम के अंकुर के नष्ट हो जाने का डर रहता है! और जमात यानी दूसरे सत्संग में जाने से वहां के वातावरण का असर सतसंगी पर पड़ता है! वह अपने यहाँ की और दूसरे सत्संग की हरेक चीज़ की तुलना करने लगता है! यहाँ तक कि अपने गुरुदेव तथा दूसरे आचार्यों की तुलना का भाव भी अपने मन में लाने लगता है जो सर्वदा अनिष्टकारक है!



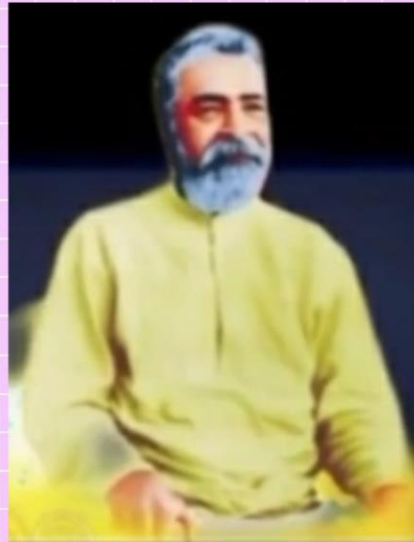
- 1- हरेक सत्संगी का कर्तव्य है कि वक्त निकाल कर दोनों वक्त संध्या ज़रूर करे! सुबह व शाम की संध्या को किसी बहाने टाल देना उत्साह की कमी ज़ाहिर करता है! यह रास्ते में रुकावट का कारण है!
- 2- जहाँ तक मुमकिन हो भंडारे में ज़रूर हाज़िर हों! अगर किसी मज़बूरी की वजह से न आ सकें तो किसी दूसरे वक्त पर ज़रूर हाज़री दें!
- 3- अपनी इन्द्रियों को जहाँ तक हो क़ाबू में रखें और दुनियावी ख्वाहिशात को कम करते जाएँ!



गुरु बड़ी खुशकिस्मती (सौभाग्य) से मिलता है! अगर सौभाग्य से मिल जाये तो उसके सत्संग से पूरा फ़ायदा उठाना चाहिए! गुरु की ज़िन्दगी में ही आत्मा का साक्षात्कार कर लेना चाहिए! वगैर गुरु के आमतौर पर आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी

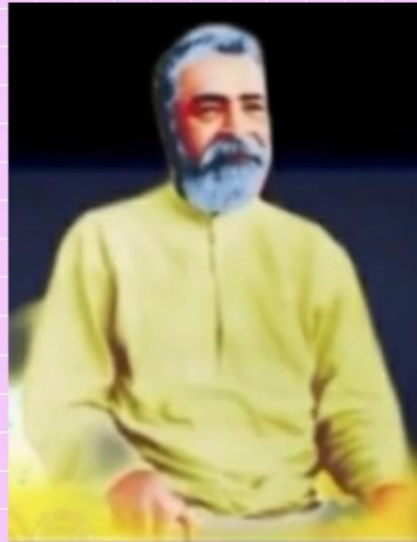
महाराज



तकलीफें का स्वागत करना चाहिए! साबुन की रगड़ से मैल छूटता है, चादर निर्मल हो जाती है! तकलीफें हमारे खुदा (प्रभु) का निमंत्रण है! जुबा (जिह्वा) पर शिकायत का लफ़्ज भी नहीं आना चाहिए! मज़बूरी का भोगना भी कोई भोगना है? उसे खुशी से भोगना चाहिए और अपने प्रीतम का तौहफ़ा (उपहार) समझना चाहिए! उसमें वही आनंद लेना चाहिए जो आनंद अपने दुनियावी माशूक (प्रियतम) के लिए, दुनियावी सुख के लिए लेते हैं!



मन ही असली बंधन का कारण है!
जो साधन इस बंधन को ढीला करे,
वही असली साधन है, अन्यथा समय
का नष्ट करना है! अगर दुनियाँ
छोड़कर मन का बंधन ढीला नहीं
हुआ तो ज़्यादा ज़िल्लत (नीचता)
खव्वारी (बुराई) और बंधन है! और
अगर दुनियाँ में रहते हुए यह बंधन
ढीला हो गया तो फिर दुनियाँ छोड़ने
की क्या ज़रूरत है? और फिर दुनियाँ
छोड़कर मनुष्य जा कहाँ सकता है!
सारांश यह है कि जगह के ख्याल को
छोड़कर मन की दुरुस्ती करनी चाहिए
लेकिन धीरे - धीरे! सख्ती से यह
बिगड़ जाएगा और सिर पर चढ़
जाएगा! इसको गुरु की मोहब्बत धीरे
- धीरे पुचकार कर ठीक करती है!



तक़लीफ़ें का स्वागत करना चाहिए!
साबुन की रगड़ से मैल छूटता है,
चादर निर्मल हो जाती है! तक़लीफ़ें
हमारे खुदा (प्रभु) का निमंत्रण है!
जुबा (जिह्वा) पर शिकायत का
लफ़्ज भी नहीं आना चाहिए! मज़बूरी
का भोगना भी कोई भोगना है? उसे
खुशी से भोगना चाहिए और अपने
प्रीतम का तौहफ़ा (उपहार) समझना
चाहिए! उसमें वही आनंद लेना
चाहिए जो आनंद अपने दुनियावी
माशूक (प्रियतम) के लिए, दुनियावी
सुख के लिए लेते हैं!



आवागमन से छूटने की खाहिश करना चाहते हो तो सब खाहिशों को छोड़ो! अच्छी खाहिश करोगे, अच्छा मिलेगा, बुरी करोगे, बुरा मिलेगा ! यहाँ तो हर चीज़ का बदला है! जो दुख सुख या बीमारी आती है, पिछले कर्मों का नतीज़ा है! ये भोगने तो पड़ेंगे ही! अगर उन्हें खुशी से भोग लिया तो संस्कार नहीं बनेंगे! जिस हाल में मालिक ने रखा है उसमें खुश रहो!



मन के बंधनों को ढीले करते चलो!
प्रत्येक वस्तु को परमात्मा की समझो! मोह छूटता जाएगा! जिस हाल में वह रखे उसमें खुश रहो !
गुरु के कहने में चलो और परमात्मा की याद से गाफिल न हो, ईश्वर तुम्हें अपना प्रेम देगा!



महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



प्रार्थना तन्मयता से हो, लगन से हो
और उसमें व्याकुलता होनी चाहिए,
प्रार्थना शब्दों से तो सभी करते हैं,
लेकिन जो प्रार्थना आत्मा से की
जाती है, वह सीधी ईश्वर के दरबार
में पहुँचती है. जो प्रार्थना मन से की
जाती है उसकी पहुँच प्रजापति तक है
क्योंकि उसमें साँसारिक चाह होती है.
प्रार्थना में किसी साँसारिक चीज़ की
चाह न हो. केवल उस परमात्मा का
प्रेम माँगिये.



अहं को दीनता में बदल दो! इससे मन का मान घटता
जाता है और ईश्वर प्रेम बढ़ता जाता है! अपने आपको
दुनियाँ का सेवक समझो! सबमें ईश्वर का रूप देखो!
इससे दीनता आती है! मन की हालत को देखते चलो,
और गुरु की क्रपा, उनके प्रकाश की धार (फ़ैज़) का
अपने ऊपर अनुभव करते रहो! यही सत्संग है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



जो मनुष्य अपना उद्धार चाहते हैं उन्हें चाहिये कि (1) वक्त के पूरे सतगुरु की खोज करें और उनकी शरण ग्रहण करें! उनके चरणों में दिन - दिन प्रीति बढ़ावें (2) उनसे सुरत शब्द योग का अभ्यास और युक्ति मालूम करके पूर्ण विश्वास, प्रीति और प्रतीति के साथ अभ्यास करें, (3) सत्संग करें और सतगुरु की शिक्षा पर चलें!

इस तरह करने से आहिस्ता - आहिस्ता एक दिन उनकी सुरत कुल्ल मालिक सतपुरुष दयाल के चरणों में पहुंच जायेगी और सच्चा उद्धार हो जायेगा!



असली ग्यान वह है जो मन और बुद्धि के शुद्ध और एकाग्र होने पर अन्दर से खुद निकलता है न कि किताब पढ़ने और सुनने से! जिनकी सुरत मनुष्य की सी है लेकिन कर्म पशुओं के से, वे मनुष्य नहीं पशु हैं! असली मनुष्य वह है जिसमें सत्य, धैर्य, शील, शूरवीरता, दया, क्षमा, संतोष, आदि गुण हैं!



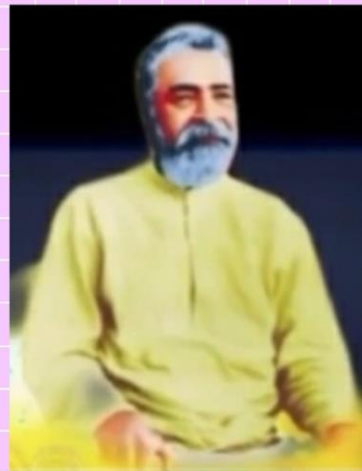
किताबों के पढ़ने से कभी - कभी भ्रम हो जाता है, इसलिए जिस तरह की किताबें जिस अभ्यासी को बतायी जावें, उसी तरह की पढ़नी चाहिये! अलग - अलग संतो ने अलग - अलग तरीकों से परमात्मा को प्राप्त किया है और हर तरीके के क्रायदे - कानून भी अलग है! इसलिए शुरू में एक ही रास्ते को पकड़ना चाहिए! दरिया (नदी) को एक ही नाव में बैठकर पार करना चाहिए! एक बार पार हो जाने के बाद अलग - अलग रास्ते चल सकते हैं, उसमें कोई हर्ज़ नहीं!



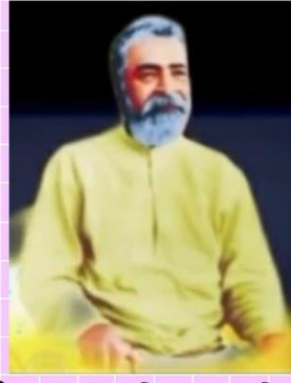
यह सोच लेना कि गुरु - कृपा होगी तो सब ठीक हो जाएगा, कमज़ोरी है! गुरु - कृपा तो शुरू - शुरू में एक तरह से सम्मोहन का काम करती है! वह अस्थायी तौर पर आपकी सुरत को ऊपर खेंच लेती है जिससे थोड़ी बहुत देर के लिए ऊपर के घाट का रस मिलने लगता है और मन उसमें लगने लगता है! लेकिन यह अवस्था सदा नहीं रह सकती! जब तक स्वयं कोशिश नहीं करोगे और अपनी सुरत को खेंच कर उसकी स्थिति ऊपर के घाटों में नहीं करोगे तब तक मन को ऊपर के घाटों का आनंद कैसे मिलेगा और कैसे वह पूजा में लगेगा?



तुम उसी सतपुरुष दयाल का अंश हो
जो सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापी है,
लेकिन मन की वजह से, मेरे - तेरे
पन की वजह से तुम्हारे और उसके
बीच में एक मेंड बन गई है! उसको
तोड़ दो, तुम और वह एक हो! यह
बिना गुरु की शरण लिए, बिना उसके
वाक्यों पर अमल किए और बिना
सत्संग के नहीं होगा! जो चीज़ ईश्वर
से अलहदगी करे, जो उस मालिक से
दूर ले जाये, उसे त्याग दो!



ईखलाक़ (चरित्र) सुधारो, सच्चाई
को कबूल (ग्रहण) करो, बुराई को
छोड़ते चलो! बुराई को छोड़कर नेकी
पर आ जाओ! जो सोचो, अच्छा ही
सोचो, जो करो, अच्छा ही करो!
अपनी इंद्रियाँ, मन, बुद्धि को शुध्द
करके अनुशासन में लाओ! बुद्धि
ईश्वर में लीन हो, बुद्धि की सलाह से
काम करें, इंद्रियाँ मन की मातहती में
काम करें!



जब - जब मौका मिले, सन्तों, गुरुजनों की सेवा करो! उनको प्रसन्न करो! उनके उपदेशों को हित - चित से सुनो और उनपर अमल करने की कोशिश करो! हमेशा पूरी कामयाबी होगी! कभी निराशा नहीं होगी! यही ईश्वर - प्राप्ति का सच्चा, सीधा और सहज रास्ता है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ! ख्यालों पर क्राबू पाने की कोशिश करो! बुद्धि को सांसारिक बातों से हटाकर संतो की वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ! मन की इच्छाओं पर विजय पाओ और मन को गुरु के ध्यान में लगाओ! इंद्रियों का आचार ठीक करो! कोशिश करो कि इंद्रियाँ सांसारिक विषष्टा रूपी पदार्थों की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें! यही रहनी सहनी को ठीक करना है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



मन को क्राबू में लाना बहुत ही मुश्किल काम है, बल्कि दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम है! वैराग्य और अभ्यास दो ही इसके साधन हैं! यह निश्चय हो जाना कि ये चीज़ें क्षणभंगुर हैं, यानी तब्दील होने वाली हैं, और उनमें हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अल्हदगी अख्तियार कर लेनी चाहिए! यही वैराग्य है! परमात्मा का नाम दिल की ज़बान से लेते रहना अभ्यास है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



परमात्मा की कृपा हर एक चीज़ पर हर समय हो रही है और एक - सी हो रही है! फर्क सिर्फ महसूस और गैर - महसूस का है! जिसने अपने बर्तन यानी मन को साफ़ कर लिया है और कोई अपवित्रता उसमें नहीं है, उस पर उसका असर ज़्यादा है और जिसके अंदर मैल भरा हुआ है और उसके कारण फ़ैज़ को क़बूल नहीं करता उस पर उसका असर या तो बिलकुल नहीं या कम है! सूरज की रोशनी सब पर एक सी पड़ती है और वह सबकी जान है! लेकिन उसका असर सब पर अलग-अलग है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



संत कहते हैं कि केवल दो बातें की जायें - भक्ति और साधना! भक्ति अनन्य हो, निष्काम हो, कोई इच्छा न हो! केवल अपने इष्ट को, परमात्मा को गुरु को प्रसन्न करना है! इस काम में अपना जीवन लुटा दें, सब कुछ बलिदान कर दें! सेवा करें! देखिए कि हमारे इष्टदेव किस प्रकार खुश होते हैं! उनकी प्रसन्नता प्राप्त करें! साधना का अर्थ है, समाधि में प्रवेश होना, अपने इष्ट के चरणों की रज बनना! उस रज की अनुभूति

होना!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



ईश्वर दर्शन हेतु कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है! वह परम शक्ति हम सभी के रोम - रोम में रमी हुई है! परन्तु हमारा मन अस्थिर होने के कारण, बुद्धि विचार द्वंद - युक्त होने के कारण, हमें अपने असली अस्तित्व का ग्यान नहीं होता! सत्संग और सदगुरु के संग का लाभ निरंतर मिलते रहने से यह आभास सम्भव हो जाता है! हमारा मन, बुद्धि, विचार स्थिर होने लगते हैं! जब रास्ते के पर्दे या रुकावटे दूर हो जाती है तो परमात्मा का अंश - आत्मा स्वयं ही प्रकाशित हो जाती है, उसका आभास होने

लगता है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



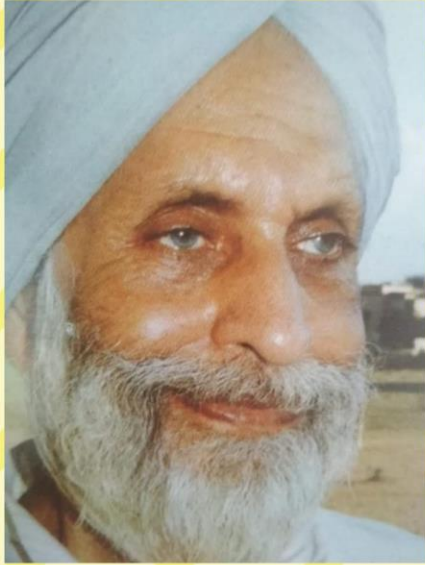
जीवन का महत्व यह है कि परमात्मा ने बड़ी कृपा करके हमें यह मनुष्य चोला दिया है! इस मनुष्य चोले में रहते हुए ही अपना उद्धार करना है, अर्थात् स्वतंत्र होना है, अपने संस्कारों से मुक्त होना है, अपनी वृत्तियों से, आदतों से, मुक्त होना है! भीतर में आनंद ही आनंद हो, सुख ही सुख हो, शांति ही शांति हो! इस सुख और शांति का रस स्वयं भी अनुभव करना है, औरों को भी बाटना है! यह हमारे गुरु का आदेश है!



परमात्मा तो आपके भीतर ही है! कहीं दूर नहीं! इतना नज़दीक कि आप सोच भी नहीं सकते! परन्तु तब भी आश्चर्य और दुख की बात है कि हम परमात्मा से दूर रहते हैं! तो कोशिश करें! अपने जीवन को महापुरुषों के बताए हुए रास्ते पर चलाकर अपने अहंकार को सच्ची

दीनता में बदल दें!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



चाहे आप साधना कर रहे हों, सत्संग में बैठे हों या कोई अन्य काम कर रहे हों, ईश्वर की उपस्थिति का भान आपको निरंतर रहना चाहिए! ईश्वर हमें देख रहा है, गुरुदेव हमें देख रहे हैं! हम सब कर्म उनके सामने कर रहे हैं - यह भान निरंतर एक जैसा रहना चाहिए! इस स्मृति से, इस भाव से, आत्मा और परमात्मा के बीच में जो दीवार है वह टूट जाएगी! आप और गुरु एक हो जाएंगे! अभ्यास करना चाहिए कि परमात्मा है, गुरु की आत्मा है, मेरी आत्मा है! उसकी उपस्थिति का भान निरंतर रहना चाहिए!



ईश्वर के दर्शन करने का मतलब यह है कि आपके भीतर में भी वही गुण आ जायेंगे जो गुण ईश्वर के हैं. यदि किसी साधना करने के पश्चात् आपके भीतर में कोई गुण उत्पन्न नहीं होते तो आपकी साधना में कहीं कमज़ोरी है. इस कमज़ोरी के विषय में आप अपने गुरु से भी पूछ सकते हैं. इस अभ्यास को बढ़ाने से आप भीतर में बढ़ेंगे.

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज

गुरु नानक जी कहते हैं कि बिना
सदगुणों को अपनाए हुए भक्ति में
सफलता नहीं मिलती! इस रास्ते में
सदव्यवहार की अति आवश्यकता
है! इसीलिए हमारे यहाँ यम - नियम
का पालन कराते हैं! और कुछ नहीं
हो सकता है तो चौबीसों घंटे अपने
मन को देखते रहो कि इसमें किसी
के प्रति घृणा की, ईर्ष्या की. भावना
तो नहीं है, किसी को दुख पहुँचाने
की इच्छा तो नहीं है! यदि हमें ईश्वर
बनाना है, आत्मा का साक्षात्कार
करना है, ईश्वर के दर्शन करने है, तो
ईश्वर के गुणों को जो शास्त्रों में लिखे
हैं या महापुरुषों ने बतलाए हैं,
अपनाने का प्रयास करना चाहिए!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज

ईश्वर के दर्शन करने का मतलब यह
है कि आपके भीतर में भी वही गुण
आ जायेंगे जो गुण ईश्वर के हैं. यदि
किसी साधना करने के पश्चात् आपके
भीतर में कोई गुण उत्पन्न नहीं होते तो
आपकी साधना में कहीं कमज़ोरी है.
इस कमज़ोरी के विषय में आप अपने
गुरु से भी पूछ सकते हैं. इस अभ्यास
को बढ़ाने से आप भीतर में बढ़ेंगे.



संसार दो हैं - एक हमारे शरीर के बाहर, एक शरीर के भीतर! दोनों संसारो का त्याग करना होगा! बाहर का सन्यास तो बड़ी आसानी से हो जाता है, परन्तु भीतर का सन्यास बहुत कठिन है! अपनी कामनाओं को छोड़ना, आशाओं, इच्छाओं का त्याग करना, इंद्रिय भोगों के सुख और रस का त्याग करना, बड़ा ही कठिन है! और सबसे कठिन है अपने मन और अहंकार का त्याग करना! इनका त्याग करके ही वैरागी बनेंगे! सर्फ बदन पर मिट्टी लगा लेना ही वैराग नहीं है, भीतर से वैराग्य उत्पन्न होना चाहिए!



अभ्यास ऐसा बन जाना चाहिये कि ईश्वर के अतिरिक्त कुछ दिखे ही नहीं! शुरु में अभ्यास करते हैं कि ईश्वर को, गुरु को, भीतर में देखते हैं, मस्तिष्क में देखते हैं, किन्तु यह अभ्यास इतना गहरा हो जाए कि चक्षु भीतर - बाहर केवल उस ईश्वर का ही दर्शन करें!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



परमात्मा तो आपके भीतर ही है!
कहीं दूर नहीं! इतना नज़दीक कि
आप सोच भी नहीं सकते! परन्तु तब
भी आश्चर्य और दुख की बात है कि
हम परमात्मा से दूर रहते हैं! तो
कोशिश करें! अपने जीवन को
महापुरुषों के बताए हुए रास्ते पर
चलाकर अपने अहंकार को सच्ची

दीनता में बदल दें!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



मन से दुनिया को छोड़ो! सब काम
इसी तरह होते रहेंगे जैसे होते हैं,
लेकिन सिर्फ भाव बदलना पड़ेगा!
हर काम को परमात्मा का समझ कर
उसकी सेवा करो और इस भाव को
स्थायी बना लो! लगातार यही ख्याल
रहे कि जो काम तुम कर रहे हो वह
ईश्वर की सेवा है! यह दुनिया ईश्वर
की है, सभी ईश्वर के हैं, जो काम कर
रहे हैं, वह ईश्वर की ही सेवा कर रहे

परमसंत डॉ. करतार सिंह जी हैं!



परमसंत डॉ. करतार सिंह जी हैं!

मन से दुनिया को छोड़ो! सब काम
इसी तरह होते रहेंगे जैसे होते हैं,
लेकिन सिर्फ भाव बदलना पड़ेगा!
हर काम को परमात्मा का समझ कर
उसकी सेवा करो और इस भाव को
स्थायी बना लो! लगातार यही ख्याल
रहे कि जो काम तुम कर रहे हो वह
ईश्वर की सेवा है! यह दुनिया ईश्वर
की है, सभी ईश्वर के है, जो काम कर
रहे हैं वह ईश्वर की ही सेवा कर रहे



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज

गुरु नानक जी कहते हैं कि बिना
सद्गुणों को अपनाए हुए भक्ति में
सफलता नहीं मिलती! इस रास्ते में
सदव्यवहार की अति आवश्यकता
है! इसीलिए हमारे यहाँ यम - नियम
का पालन कराते हैं! और कुछ नहीं
हो सकता है तो चौबीसों घंटे अपने
मन को देखते रहो कि इसमें किसी
के प्रति घृणा की, ईर्ष्या की. भावना
तो नहीं है, किसी को दुख पहुँचाने
की इच्छा तो नहीं है! यदि हमें ईश्वर
बनाना है, आत्मा का साक्षात्कार
करना है, ईश्वर के दर्शन करने है, तो
ईश्वर के गुणों को जो शास्त्रों में लिखे
हैं या महापुरुषों ने बतलाए हैं,
अपनाने का प्रयास करना चाहिए!



जो व्यक्ति यह साधना करता है कि -
"हे प्रभु! आप जो भी करते हैं वह
हमारे हित में है " प्रभु पर विश्वास
करता है, उसको कभी दुख का भान
नहीं होगा! वह हमेशा आनंदमय
रहेगा! यही राज़ी - ब - रज़ा (यथा
लाभ संतोष) की स्थिति है! अपनी
गति को ईश्वर की गति में मिला देना!

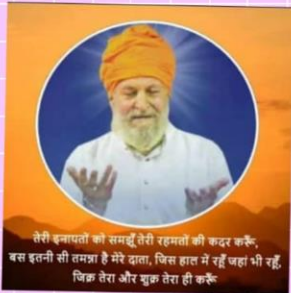
महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



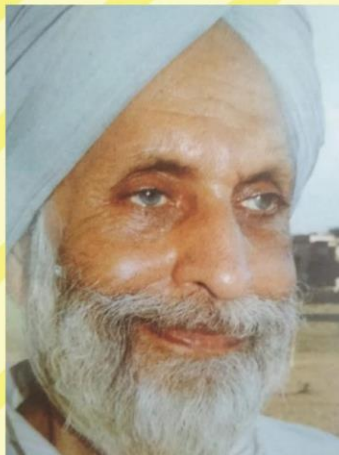
जब हम ईश्वर से प्रेम करते हैं, गुरु से
प्रेम करते हैं, अपने इष्टदेव से प्रेम
करते हैं तब इच्छाएँ कम हो जाती है!

जो प्रभु से प्रेम करते हैं उनकी सहज
ही, अप्रयास ही त्याग की वृत्ति हो
जाती है! उनका शरीर के साथ लगाव
नहीं रहता!

ईश्वर प्रेम में ऐसा आनंद है कि सहज
में ही जब उस आनंद की प्राप्ति हो
जाती है तब कुछ और इच्छा रहती ही
नहीं!



" हर समय ईश्वर के होने का
अभास" - यह एक प्रकार का
अभ्यास है जो प्रत्येक व्यक्ति को
करना चाहिए! प्रत्येक क्षण प्रभु की
याद में रहें, उसकी हुजूरी का भान
रहे! हमारे यहाँ ईश्वर कृपा को लेने
का तरीका यही है! इस अभ्यास को
करें और जिस प्रकार की साधना
आप करते हैं, उस भाव को बढ़ाते
रहें! कोई भी साधना करें, निर्मल
और प्रेम भाव में करें!



अहंकार से प्रभु नहीं मिलते, चाहे
कोई भी साधन करें, दीनता को तो
अपनाना ही होगा!

ईश्वर से, गुरु से, उनकी कृपा के लिए
दीनता पूर्वक प्रार्थना करते रहना
चाहिए! इससे रास्ता सरल हो जाता
है!

प्रार्थना से हमें प्रभु की कृपा प्रसादी
मिलती है जो हर वक्त हमारा
मार्गदर्शन करती रहती है!



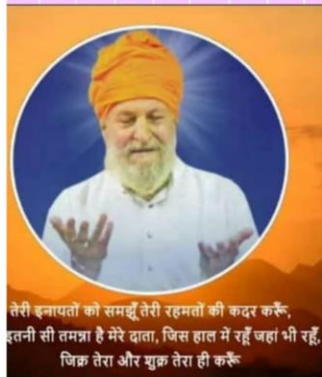
करुणा, दया, सहानुभूति, सेवा - ये
ऐसे गुण हैं जिनको जब तक हम नहीं
अपनाएंगे, तब तक हमें ईश्वर की
समीपता प्राप्त नहीं हो सकती! इन
गुणों के होते हुए भी, जिज्ञासुओं में
अहंकार रह जाता है जो भिन्न भिन्न
रूप धारण करके आता है!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज

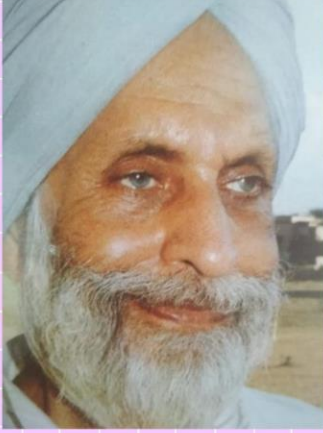


जो काम करो ईश्वर की हुजूरी की
स्मृति में, ईश्वर के प्रति निष्काम भाव
से, दूसरों की सेवा के रूप में करो
तथा कर्म फल के प्रति असक्ति न हो!



तेरी बनापती को समझूँ तेरी रहमतों की कदर करूँ,
दवनी सी तमन्ना हे मेरे दादा, जिस हाल में रहूँ जहाँ भी रहूँ,
जिऊ तेरा और शुक्र तेरा ही करूँ

संत भी सूर्य समान है ईश्वर समान है!
जैसे सूर्य की किरणें दूर - दूर तक
जाती हैं वैसे ही सन्तों की किरणें भी
दूर - दूर तक जाती है।



हमारा पूरा जीवन सेवा का रूप बन जाये! हाथ पाँव से, मन से, ज़बान से हम जो भी कर्म करें वे दूसरों के हित में हों, दूसरों की प्रसन्नता के लिए हों तथा कर्मफल के साथ कोई आसक्ति न हो! हम किसी प्रकार की कोई आशा न रखें! पूजा के रूप में, सेवा के रूप में, आराधना के रूप में प्रत्येक काम हम ईश्वर की सेवा समझ करते रहें!



प्रेम ही साधन है! जिज्ञासु व परमात्मा में, जिज्ञासु व गुरु में, योग करने में प्रेम ही सरेस हो, दोनों में प्रेम हो! जिज्ञासु को गुरु के प्रति तथा गुरु को जिज्ञासु के प्रति इतना प्रेम बढ़ता जाये कि दोनों की दुई मिट जाये! यह ज़रूरी नहीं है कि वे दोनों शारीरिक तौर पर नज़दीक हों! मन से नज़दीकी हासिल करनी और आपस में आत्मिक एकता हो जानी चाहिये! इस साधन से ही जिज्ञासु को लाभ पहुँचैगा और उसका उद्धार भी होगा! गुरु का ऋण भी उतरेगा! वह भी आपकी सेवा अधिकाधिक करता रहेगा!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



ईश्वर की या सतगुरु की कृपा जिस पर होती है, वही इस रास्ते पर चलता है! बिना ईश्वर की कृपा के इस रास्ते पर नहीं चल सकता और बिना रास्ता चले ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती! इसके लिए ईश्वर की या संतो की कृपा अति आवश्यक है!



परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहब



वही व्यक्ति अभ्यास कर सकता है जो वैरागी है! जो बे - राग है, जिसके भीतर में संसार की किसी, किसी विचार, किसी व्यक्ति के प्रति कोई आसक्ति यानी मोह नहीं है, त्याग वृत्ति है, सन्यास वृत्ति है! परन्तु इसके साथ साथ अनुराग, ईश्वर के चरणों का प्रेम, उसका अभ्यास, उसी का ध्यान, उसी की प्रशंसा, कानों में गूँजती हो, उसी की स्मृति ज़बान पर हो और शरीर का रोम रोम उसी की स्मृति करता हो! भीतर में इन्द्रियों द्वारा, मन, वचन, कर्म, बुद्धि द्वारा, केवल प्रभु का ही ध्यान हो! शरीर, मन, बुद्धि, इंद्रियाँ सब उसी के चरणों में लगी रहें!



हम लोग साधना पर ज़ोर देते हैं, आँखें बंद करके आंतरिक साधना पर ज़ोर देते हैं! साधना करना ज़रूरी है, इसका अपना शुभ परिणाम होता है! परन्तु जब तक हमारा व्यवहार शुद्ध नहीं होता, ईश्वरमय नहीं होता, तब तक समझ लीजिए कि यह अभ्यास कोरा कर्मकांड या मशीनी प्रक्रिया के समान है! साधना का परिणाम तो यह होना चाहिए कि हमारा चित्त पूर्णतः निर्मल हो जाये! हमें प्रतिक्षण चित्त निर्मल करने का ऐसा अभ्यास करना चाहिए कि हमारे चित्त पर एक भी दाग न रहे!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



पूज्य गुरुदेव कह रहे हैं कि सच्चे जिज्ञासु के भीतर तीन गुण होने चाहिए, नदी की तरह दूसरों की सेवा करें, सूर्य की तरह दूसरों को लाभ पहुँचायें, उनको जीवन दान देना. और धरती की तरह सहनशीलता. बिना गुणों के भक्ति नहीं होती. चाहे ज्ञान की साधना करें, चाहे प्रेम की साधना करें, बिना गुणों के कोई भी, किसी भी प्रकार की साधना सफल नहीं हो सकती. यहाँ भक्ति का अर्थ है

- साधना.



हमारे यहाँ सत्संग है - गुरु से निकटता, समीपता, हाज़री - यानी तन और मन की समीपता!
जैसे सूर्य के पास बैठने से सूर्य की ऊष्मा मिलती है, इसी तरह सच्चे संत या गुरु के पास बैठने से शक्ति मिलती है! और वह संत क्या चाहता है? उसके व्यवहार से पता चलता है कि वह अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं चाहता! वह तो यही चाहता है कि आपको सुख मिले! मौन में उसकी हार्दिक इच्छा होती है कि शिष्य मानसिक तौर पर खुश रहें, शारीरिक और आर्थिक तौर पर भी खुश रहें!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



पूज्य गुरुदेव कह रहे हैं कि जिज्ञासु के भीतर तीन गुण होने चाहिए, नदी की तरह दूसरों की सेवा करें, सूर्य की तरह दूसरों को लाभ पहुँचायें, उनको जीवन दान देना. और धरती की तरह सहनशीलता. बिना गुणों के भक्ति नहीं होती. चाहे ज्ञान की साधना करें, चाहे प्रेम की साधना करें, बिना गुणों के कोई भी, किसी भी प्रकार की साधना सफल नहीं हो सकती. यहाँ भक्ति का अर्थ है - साधना. "बिना गुण भक्ति न होई" - इतने ऊँचे गुण होने चाहिए तब हम भक्ति के अधिकारी बनते हैं. आज सब



जिसके हृदय में ईश्वर के प्रति, गुरु भगवान के प्रति, सच्चा आत्मिक प्रेम उत्पन्न हो गया है, सच्ची दीनता भी उसी के हृदय में उत्पन्न हो सकती है! सच्ची दीनता केवल प्रेम में है, आत्मा में है! प्रभु प्राप्ति के लिए दीनता आनी चाहिये! भवसागर में डूबने के लिये एक अभिमान काफी है! भवसागर पार करने में, ईश्वर की राह में, अभिमान हमारा सबसे बड़ा शत्रु है! इससे बचना होगा! सच्ची दीनता अपनाएँ!
(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



किसी के साथ भी द्वेष भाव नहीं रखना है! चाहे कोई आपको कितना भी कष्ट दे, आपके मन में उसके प्रति द्वेष भाव न हो! बाबा शेख फरीद जी कहते हैं - "जो तुम्हारे साथ अत्याचार करे, तुम उसके घर जाकर उसके पाँव चूमो, पाँव दबाओ, उससे द्वेष न करो, बदले की भावना न हो!"
" फरीदा बुरेदा भला कर गुस्सा मन न हड़ाय"
फरीदा जे तैं मारन मुक्कीया, तिना न मारे धुम्म!
घर तिनाके जाय के, पैर तिना दे चुम्म !!
(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



हमारा शरीर स्वस्थ हो, मन स्वस्थ हो!
 स्वस्थ से मतलब है कि कुविचारों से
 ऊपर उठें, संस्कार न बनने पावें!
 बुद्धि स्वस्थ हो वह प्रेरणा आत्मा या
 गुरु से ले! मन बुद्धि के आधीन हो,
 शरीर और इंद्रियाँ मन के आधीन हों -
 सब में एक प्रकार का संगीत हो,
 समन्वय हो, फिर देखिए आपको
 शांति मिलती है कि नहीं!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



दर्शन करने हेतु कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है!
 वह परमशक्ति हम सभी के रोम - रोम में रमी हुई है,
 परन्तु हमारा मन अस्थिर होने के कारण, बुद्धि विचार
 इंद्रियुक्त होने के कारण, हमें अपने असली अस्तित्व का
 आभास नहीं होता! सत्संग और सतगुरु की सौहबत
 निरन्तर प्राप्त करते रहने से यह आभास संभव हो जाता
 है! हमारे मन, बुद्धि, विचार स्थिर होने लगते हैं! जब
 रास्ते के पर्दे या रुकावटें दूर हो जाती हैं तो परमात्मा का
 अंश स्वतः ही प्रकाशित होने लगता है!
 (ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



साधना के महत्व को अच्छी तरह समझना चाहिए,
अपने जीवन को कला की तरह व्यतीत करना चाहिए!
हमें विवेक बुद्धि भी प्राप्त है परन्तु हमने सांसारिक
भोगों में रमे रहने के कारण विवेक का विनाश कर
दिया है! विवेक गया तो वैराग्य भी गया! जब विवेक
और वैराग्य सध जाता है तब ग्यान का उदय होता है!
हम आत्मा की अनुभूति करने लगते हैं और इस आनंद
की अनुभूति के आगे संसार के सब पदार्थ फीके लगने
लगते हैं!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब)



अपने पराए को छोड़ो! सब एक हैं!
तम और रज से ऊपर उठो व सत को
पहचानो! 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम'
यह ईश्वर का स्वरूप है, और यही तेरा
भी स्वरूप है! कहाँ भटके हुए हो!
अंतर की और घुसकर तो देख, तू तो
वही है जो ईश्वर है! हृदय में कमी
सम्बन्ध की है! सम्बन्ध बनाओ! वही
तुम्हारा असली परमपिता है!



संसार की सेवा करें, परन्तु प्रेम भाव से, ईश्वर की सेवा समझ कर! सबके साथ प्रेम का व्यवहार करें, उन्हें ईश्वर का रूप समझ कर! यदि हमें सेवा का फल नहीं मिलता तो निराशा होती है, यह तो ईश्वर की सेवा नहीं है! ईश्वर हमारा पालन - पोषण करता है तो क्या हमसे कोई आशा रखता है? तो हमारी भी यह सहज अवस्था बन जाय, कोई आशा न रखें! सबको ईश्वर का रूप जानकर सेवा करें!
(महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)

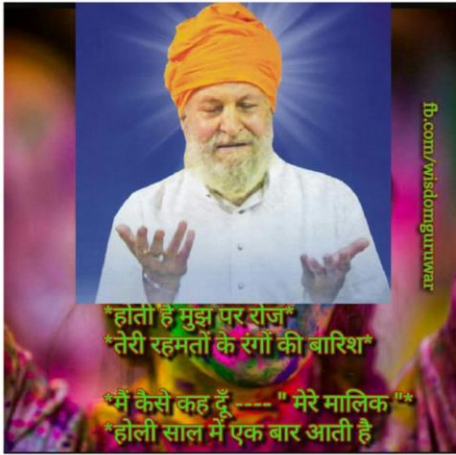


ईश्वर सत स्वरूप है! मनुष्य के भीतर जो आत्मा बैठी है वह भी सत स्वरूप है! उसको पहचानो और अपने आप को जानो!

संतोष वही कर सकता है जिसके भीतर में सहनशीलता और ग्यान हो!
ग्यान और अग्यान, वेराग्य और

अनुराग दोनों से मुक्त हो!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब

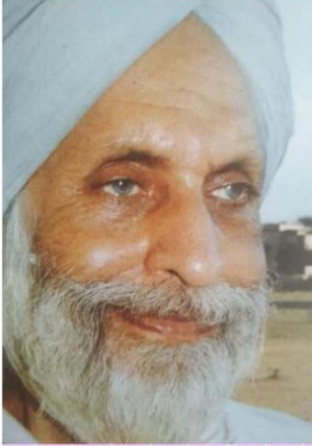


ओडम के मायने शास्त्रों में उस शक्ति से हैं जो चारों जगत - पिण्ड, ब्रह्माण्ड, पारब्रह्म और दयाल देश, की स्वामी है, जिसमें उस आदि शक्ति के तीनों गुण - पैदा करने वाला, पालन करने वाला, प्यार करने और आनन्द देने वाला, हैं. यह शब्द सब सिफ़ात का मजमां (गुणों का भण्डार) है. जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, और तुरीया हर हालत में मौजूद हैं. इस शब्द के अन्दर भी सभी शक्तियाँ मौजूद हैं. इसके उच्चारण करने का मतलब यही है कि उस शक्ति का होना हम अपने घट में महसूस करें, हमको ज्ञान हो और आहिस्ता-आहिस्ता उससे मिलकर एक हो जायें. यह परमात्मा में मिल जाने का महामंत्र है.



गुरु जो कि ईश्वर का प्रतिनिधि स्वरूप है - उसके चरणों में माथा टेकने का सही मतलब यही है कि सबसे पहले हम अपने अहंकार को, अपनी बुराइयों को, उनके चरणों में अर्पण कर दें! उनके सदवचनों की प्रसादी लें, निर्मलता लें, उनके गुणों को अपनाएँ और वैसे ही हम हो जाएँ!
-- महात्मा डॉ. करतार सिंह जी

महाराज



अपने हृदय में, मस्तिष्क में, जो
 अनहद हो रहा है, ध्वनि हो रही है,
 उसे सुनने में दोनों कान लगाएँ ! प्रेम
 से सुनें, सरलता से सुनें, बाहर की
 आवाज़ों से कान हटा लीजिए! कानों
 को बंद कर लें! अनहद शब्द सुनें!
 आंखों को बंद कर लें! भगवान के
 दर्शन करें! मुख को बंद कर लें एवं
 प्रभु का नाम बड़े प्रेम और आनंद से
 लें!



संत का मतलब है 'सत स्वरूप' अर्थात्
 उसमें और ईश्वर में कोई अंतर नहीं!
 ईश्वर ही जब इस रूप में आता है, उसी
 को संत कहते हैं!

हमारे यहां की यह रिवायत है,
 बरक़त है, कि जो गुरु के आदेशानुसार
 चलता है उसका दीन यानी परलोक भी
 बनता है और दुनियाँ भी बनती है!



अपने पराए को छोड़ो! सब एक हैं!
 तम और रज से ऊपर उठो व सत को
 पहचानो! 'सत्यम, शिवम, सुन्दरम'
 यह ईश्वर का स्वरूप है, और यही तेरा
 भी स्वरूप है! कहाँ भटके हुए हो!
 अंतर की और घुसकर तो देख, तू तो
 वही है जो ईश्वर है! हृदय में कमी
 सम्बंध की है! सम्बन्ध बनाओ! वही
 तुम्हारा असली परमपिता है!



प्रभु के गुणों का स्मरण करें, बार बार
 स्मरण करें! तस्वीर या गुरु के शरीर
 का अपने भीतर में ध्यान करेंगे तो
 जड़ता आ जायेगी! गुणों का स्मरण
 करने से ही आपके भीतर में वे गुण
 अंकित हो जाएँगे, यही ध्यान है! प्रभु
 के पवित्र विचार, पवित्र गुणों का
 ध्यान, उन गुणों के प्रति जाग्रति नहीं
 होगी तो वे गुण आपके भीतर बसेंगे
 कैसे!



जिस तरीके से भी सत्संग में बैठते हैं,
परमात्मा का गुणगान करके, उसी
प्रकार पाँच - सात मिनट के लिए गुरु
का मानसिक सत्संग करना चाहिए कि
गुरुदेव बैठे हैं, ईश्वर बैठे हैं और
उनकी क्रपा प्रसादी हम पर बरस रही
है! मन ही मन, जो उन्होंने 'नाम' दिया
है, उसे लेते रहें! यह चित्त को स्थिर
करने का साधन है! अंत में प्रसाद
लेना है! इसके बाद जो अभ्यास
आपको बतलाया गया है वह करें!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब



गुरु की सेवा करो! भाइयों की सेवा
करो, माता - पिता की सेवा करो,
यह भी गुरु की सेवा है! गुरु के जो
गुण हैं, ईश्वर के जो गुण हैं, उनको
सराहो! जितना उसके स्वरूप को,
गुणों को सराहेंगे, उतना ही निखार
आता चला जायेगा! गुरु के गुणों को
सराहते हुए, उनकी स्मृति करते हुए
उनको अपने जीवन में उतारें! आगे
चलकर पूर्ण समर्पण होता है, इससे
पहले नहीं!



बिना ईश्वर के या गुरु के, जो कि
ईश्वर स्वरूप है, उनकी कृपा के बिना
मनुष्य का उद्धार नहीं हो सकता!

भ्रम दूर होने का मतलब है - उद्धार!



बिना गुरु की कृपा के माया के
जंजाल से निकलना नहीं हो सकता!

इस पात्रता के लिए साधना करनी
होगी!



ईश्वर सर्वव्यापक है और उनकी कृपा
की धार प्रतिक्षण सब प्राणियों पर
एक जैसी बरस रही है! इस बारिश
को सूफियों में 'फैज़' कहा है, सन्तों
ने अमृत कहा है, ईसाइयों ने ग्रेस
कहा है, अरविंद जी ने 'भगवत
प्रसादी' कहा है! इसी को प्रभु के
चरण कहा गया है! मंज़िल तो अपने
इष्ट के इश्क में अपने आप को मिटा
देना है, उसका प्यारा बनना है!
करुणा से पुकार करनी है!





निरंतर ईश्वर या गुरु की याद बनी रहे,
वह भी प्रेम से, श्रद्धा से, विश्वास से,
जैसे सरल बच्चा यानी नवजात शिशु
माँ की गोद में संतुष्ट रहता है! प्रकार
प्रभु के चरणों में रहना है! जो व्यक्ति



इस तरह प्रभु के नाम का स्मरण
करता है, उसे प्रभु के दर्शन हो सकते
हैं! अपनी आत्मा का साक्षात्कार हो
सकता है तथा संसार में या भीतर में
जितने दुख सुख है उनसे मुक्त हो
सकता है!



मन को शांत करने के लिए पहला
चरण है सदाचार का, सदविचार
का, सदव्यवहार का! जब तक
सदगति नहीं आती है तब तक मन
स्थिर नहीं होगा, एकाग्र नहीं होगा
और जब तक शरीर में तनाव रहेगा
तब तक अमृत प्रसादी, भगवती
प्रसादी का पूर्ण अनुभव नहीं हो
सकता है! अपने आप को पूर्णतः
समर्पण कर देना है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



जब तक भीतर में कोमलता, शुद्धता और सात्विकता नहीं आएगी, साधना में कोई लाभ नहीं होगा. प्रत्येक कर्म का फल कुछ न कुछ तो होता ही है परन्तु जितनी आशा आप लेकर आते हैं वह निराशा में ही रहेगी.



इन्द्रियों और मन दोनों पर विजय प्राप्त करनी है.

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



संसार को जानने के लिए सांसारिक मन की आवश्यकता होती है, परन्तु परमात्मा की अनुभूति तभी होगी जब हम आत्मा का साक्षात्कार कर लेंगे! आत्मा ही परमात्मा में लय हो सकती है, शुद्ध बुद्धि केवल आभास मात्र ले सकती है, वह भी पूरी तरह नहीं!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



आत्मस्थित हो कर जो कार्य हमारे
द्वारा होगा उसका प्रभाव हमारे चित्त
पर नहीं पड़ेगा! उसका अक्स हमारे
चित्त पर पड़ेगा, उसकी छाया हमारे
चित्त पर नहीं पड़ेगी तो हमारा चित्त
निर्मल रहेगा और कर्म फल नहीं
बनेगा!

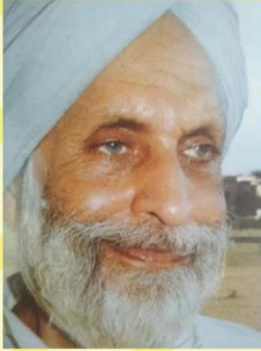
महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



भीतर में तनिक भी अहंकार न रहे -
मेरापन न रहे! "तू तू" की रट रहे और
इसी रट में उस सर्वोच्च स्थिति में पहुँच
जाएँ जहाँ का वर्णन करने के लिए
शब्द नहीं होते! यह स्थिति रोम - रोम

में बस जाए!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



संसार में रहते हुए हमें उत्तेजना,
प्रकोप, शत्रुता, आक्रमण आदि का
सामना करना पड़ेगा, दुख और
तकलीफें आएँगी, परंतु जीवन की
कला यह है कि हम कमल पुष्प की
तरह रहें, सदा खिले हुए रहें! चित्त
पर किसी प्रकार की छाया अंकित न
हो!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



'दर्शन' केवल यह नहीं है कि भगवान
की किसी मूर्ति के दर्शन कर लें!
मूर्तियों के दर्शन को महापुरुषों और
शास्त्रों ने दर्शन नहीं माना है! उनका
दर्शन यह है कि मेरे और मेरे प्रियतम
परमात्मा में कोई फर्क न रहे! दर्शन
का मतलब है कि भगवान के चरणों
में जाएं तो हम उनकी चरण रज बन
जाएँ!



शांति वह है जिसके साथ पूर्ण तृप्ति
हो, कोई इच्छा न हो, कोई आशा न
हो! जिस परिस्थिति में रहें, शांत रहें!



यह आत्मा का स्वरूप है! मन की
शांति अस्थायी है, क्षण भंगुर है!
आत्मा की शांति तो निरंतर रहती है,
गंगा प्रवाह की तरह!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी

महाराज



यह तो संसार है! इसमें सब ओर से
उत्तेजना मिलेगी ही! बाहर के लोग
तो फिर भी हमें कम उत्तेजना देते हैं
परन्तु परिवार के लोग हमें ज़्यादा
उत्तेजना देते हैं! त्रितीक्षा का अभ्यास
करना चाहिए, सन्तोष को अपनाना
चाहिए! सहनशीलता को अपनाना
चाहिए!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



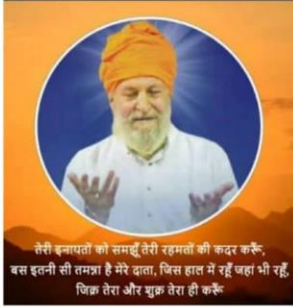
हमारे भीतर में राग - द्वेष की भावना
न हो, इर्ष्या की भावना न हो, झूठ
बोलने की आदत न हो! भीतर में प्रेम
की ज्योति प्रकाशित होती रहे,
विकसित होती रहे! सबसे प्रेम करें
क्योंकि प्रेम सर्वव्यापक है! सबमें
ईश्वर के दर्शन करें! जब सब में ईश्वर
के दर्शन करेंगे तो भीतर से बुराइयाँ
अप्रयास ख़तम होती चली जाएंगी!
चित्त, बुद्धि एवं हृदय निर्मल होनी
चाहिए, पुराने संस्कार न हों!



हमें अपना सर्वस्व भगवान के हाथों
में, भगवान के चरणों में, समर्पण
कर देना चाहिए! उस महान
कलाकार को हमें अपनी गढ़त करने
का अवसर देना चाहिए! "हे प्रभु!
तेरी इच्छा पूर्ण हो"! जैसी मूर्ति आप
बनाना चाहते हैं, बना डालिए,

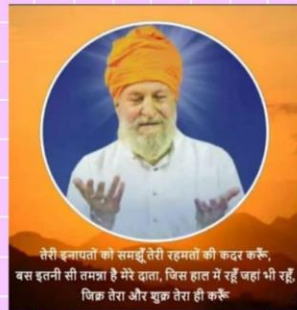
स्वीकार है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



हमारा हित इसी में है कि हम अपमान आदि उत्तेजनाओं को सहन करें और जो हमें उत्तेजना देता है उसके लिए हम प्रार्थना करें! हम उसके सुख के लिए भी प्रार्थना करें, यह दीनता है! दीनता का दूसरा रूप यह है कि जो ईश्वर करें हम उसमें संतुष्ट रहें और उसे स्वीकारें! अभ्यास करें कि जो कुछ हो रहा है हमारे हित के लिए हो रहा है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



अपने सारे जीवन को, प्रातः निद्रा से जागने के समय से रात को सोते समय तक, सारा समय साधनामय बना दिया जाय! जो कर्म करें हाथ - पांव से, विचार द्वारा, वाणी द्वारा, उसमें ईश्वर उपस्थिति का भान रहे ताकि हम सचेत रहें कि हमसे कोई बुराई न हो जाए! जो ही काम करें अपने सच्चे पिता की प्रसन्नता के लिए करें!



इस धरती पर सहनशीलता एक महान
गुण है! सत्संगी का यही श्रंगार है!

हमारे यहाँ का तप है लानत,

मालामत, अपमान आदि प्रतिकूल

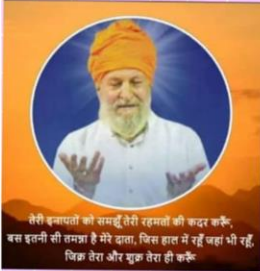
भावों को स्वीकार करना! ये हमारे

हित के लिए है! जो इनको स्वीकार

कर लेता है, वह आत्मा का

साक्षात्कार कर लेता है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



तेरी बुझावणों को समझूँ तेरी रहस्यों की कादर करूँ,
बस इतनी सी समझ है मेरे दादा, जिस हाल में तूँ जहाँ भी तूँ,
खिन्न तेरा और शुक्र तेरा ही करूँ



महापुरुषों ने सारे दुखों से निवृत्त होने

की एक ही बात कही है - "सर्व रोग

की औषधि नाम"! सब बीमारियों

की, सांसारिक व्याधियों की एक ही

औषधि है - ईश्वर का नाम! ईश्वर

प्रेम, परमात्मा की शरण लेना, अपने

आपको ईश्वर के चरणों में पूर्णतः

समर्पित कर देना!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब

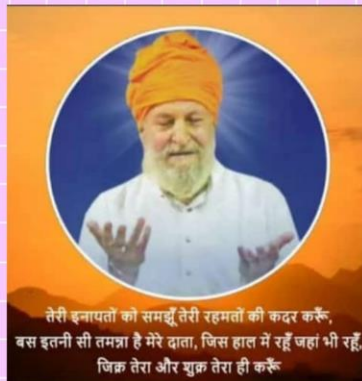


प्रत्येक सत्संगी को जागरूक होना चाहिए! अपनी कमज़ोरियों के प्रति, त्रुटियों के प्रति सतर्क रहना चाहिए! उनको दूर करने का प्रयास करना चाहिए! यही साधन है! मन की कमज़ोरियों से ऊपर उठना महान तप है! इसलिए सत्संगी को 'वीर' बनना पड़ता है, तपस्वी, विचारशील बनना पड़ता है! आपके पास बैठने से व्यक्तियों को शांति और आनंद की अनुभूति हो!



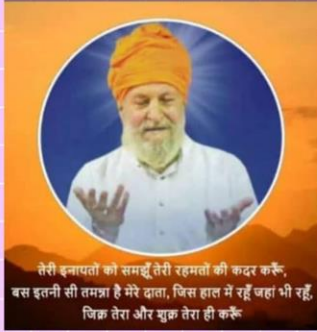
वास्तव में अगर गुरु के साथ सच्चा प्रेम है तो कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है!

गुरु और शिष्य में जो द्वैत का भाव है, वह जाता रहे! यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि हम दो हैं या एक है!



तेरी इनायतों को समझूँ तेरी रहमलों की कदर करूँ,
बस इतनी सी तमन्ना है मेरे दावा, जिस हाल में रहूँ जहाँ भी रहूँ,
जिन्न तेरा और शुक्र तेरा ही करूँ

ईश्वर क्रपा या गुरु क्रपा जो मौन से होती है, वह प्रवचनों के द्वारा नहीं होती!



अपने जीवन को प्रेममय बनाना
होगा! आपके संपर्क में जो भी आए
उसके साथ जो भी आपका व्यवहार
है, उसमें प्रेम हो, ईश्वर के प्रेम का
विकास हो! हम प्रेम में स्थिर रहें!
संसार की आँधियाँ आयें, दुख -
सुख आयें, परन्तु हमारे भीतर की
स्थिति स्थिर रहे!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



ईश्वर के गुणों को अपनाएँ और जो
भी काम हम सुबह से लेकर शाम
तक करें, ईश्वर के गुणों की याद के
साथ करें! इसी से हमारा उद्धार हो
जायेगा! हमारा मन निर्मल हो
जाएगा! मन जो अशुद्ध हो गया है,
संसार के साथ चिपक गया है, उससे
मुक्त हो जायेगा! जिसको हम मोक्ष
कहते हैं, वह प्राप्त होगा और हम
जीवन मरण के चक्कर से छूट जायेंगे!



प्रार्थना करने, मनन करने, आचार -
विचार, व्यवहार शुद्ध करने और
सद्गुणों को अपनाने तथा सद्व्यवहार
के बिना रास्ता आगे नहीं चलेगा!
अपने मन पर अंकुश लगाना चाहिए!
मन, शरीर और इन्द्रियों पर अंकुश
रखें! बुद्धि, मन को वश में रखें! बुद्धि
आत्मा और गुरु से प्रकाशित हो!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



पूजा से पहले प्रार्थना करते हैं, परमात्मा
के गुणों को याद करते हैं, उन गुणों को
सराहते हैं! उसके लिए वायुमंडल,
वातावरण, बना लिया, परमात्मा की
नज़दीकी हासिल कर ली! अब उससे
प्रार्थना करो, जो माँगना है माँगो! फिर
उसकी प्रसादी लेने के लिए अपने
आपको समर्पित कर दो! उसकी कृपा
की गंगा में डुबकी लगाओ!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



वास्तविक लाभ तब मानना चाहिए
जब हमारे भीतर में वही गुण समा
जायें जो ईश्वर में होते हैं! ईश्वर की
पूजा, गुरु या इष्ट की पूजा यही है!
उनके गुणों को सराहें और उन गुणों
को अपनाने का प्रयास करें! गुरु
दर्शन, ईश्वर दर्शन यही है कि ईश्वर,
गुरु या इष्ट के जो गुण हैं वह सब
हमारे में समा जाएं!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब



परमात्मा के बीच की दीवार है!
अभ्यास करना चाहिए कि भीतर में
विचार न उठें या कम से कम उठें !
साधना यही करनी है कि मन हमारे
अधीन हो जाए! मन परमात्मा ने हमें
बड़ा विचित्र उपकरण प्रदान किया
है! इसका सदुपयोग करना है!
आवश्यकता हो तो विचार उठा
लिया, नहीं तो इसको शांत रखना
चाहिए!



साधना का वास्तविक लाभ तब
मानना चाहिए जब हमारे भीतर में
वही गुण समा जायें जो ईश्वर में होते
हैं! ईश्वर की, गुरु की या इष्ट की पूजा
यही है! उनके गुणों को सराहें और
उन गुणों को अपनाने का प्रयास करें!
गुरु दर्शन, ईश्वर दर्शन यही है कि
ईश्वर, गुरु या इष्ट के जो गुण
हैं वे सब हमारे में समा जायें!



पहले प्रसाद को परम पिता परमात्मा
के चरणों में बड़ी दीनता के साथ
अर्पित करना चाहिए! प्रसाद को जब
बांटा जाये तब बांटने वाला अपने इष्ट
देव में लय होकर बांटे! जो भी प्रसाद
को ले वह अपने गुरुदेव, इष्टदेव के
ध्यान में लय होकर प्राप्त करे! ऐसे
प्रसाद से रोगियों को रोग तक ठीक हो
जाते हैं!



हर साधक का यह पुनीत कर्तव्य है,
धर्म है, कि वह संतमत के उसूलों पर
चलकर परमात्मा का साक्षात्कार करे
और दुनियां के सामने अपने आप को
नमूने के रूप में पेश करे! आपको
परमात्मा के प्रेम में सरोबोर देखकर
हर जिज्ञासु और दुनियादार आपके
सिद्धान्तों में विश्वास ला सकेगा!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



कम बोलना चाहिए, आवश्यक होने
पर ही बोलें, वरना चुप रहें! अभ्यास
करते रहें कि विचार तभी उठें जब
हम चाहें! जीवन के लक्ष्य के प्रति
जागे और उस लक्ष्य की प्राप्ति के
लिए जो - जो साधन अनुकरणीय
हों, उन्हें पूरा करने के लिए पूरी निष्ठा
के साथ तन, मन, वचन से जुट

जायें!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब



पहले प्रसाद को परम पिता परमात्मा के चरणों में बड़ी दीनता के साथ अर्पित करना चाहिए! प्रसाद को जब बांटा जाये तब बांटने वाला अपने इष्ट देव में लय होकर बांटे! जो भी प्रसाद को ले वह अपने गुरुदेव, इष्टदेव के ध्यान में लय होकर प्राप्त करे! ऐसे प्रसाद से रोगियों को रोग तक ठीक हो जाते हैं!



जाते हैं!



अगर आपके दिल में गुरु का प्रेम है तो आप उससे प्रेम करेंगे और वह आपसे प्रेम करेगा! जब हालत ऐसी बन जाए कि उससे निरंतर प्रेम की डोर लगी रहे और हर वक्त उसका ख्याल बना रहे. तो दुनियाँ के ख्याल आते भी रहें तो उसका कोई हर्ज़ नहीं है! अगर ऐसा अभ्यासी गुरु के दर्शनों को न भी जाय, तो भी कोई हर्ज़ नहीं, लेकिन जिनको अभी ऐसा प्रेम पैदा नहीं हुआ है और फ़ायदा उठाना चाहते हैं तो यह ज़रूरी है कि तीन - चार महीने में एक बार गुरु के पास जाते रहें! कुछ वक्त भले ही ज़्यादा लग जाय लेकिन फ़ायदा होगा!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज

ईश्वर के दर्शन करने का मतलब यह है कि आपके भीतर में भी वही गुण आ जायेंगे जो गुण ईश्वर के हैं. यदि किसी साधना करने के पश्चात् आपके भीतर में कोई गुण उत्पन्न नहीं होते तो आपकी साधना में कहीं कमज़ोरी है. इस कमज़ोरी के विषय में आप अपने गुरु से भी पूछ सकते हैं. इस अभ्यास को बढ़ाने से आप भीतर में बढ़ेंगे.

संसार में सबका भला हो"!

ऐसी प्रार्थना से मन निर्मल हो जाता है

और जब हम सबके भले के लिए

प्रार्थना करते हैं तो भीतर से स्वार्थ का

संस्कार जो है, वह समाप्त हो जाता

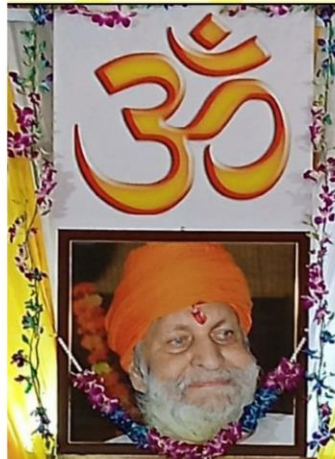
है! धीरे - धीरे लोभ, मोह, अहंकार

आदि के संस्कार भी समाप्त हो जाते

हैं, एवं सच्ची दीनता व सच्ची सरलता

आती है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज





हमारा लक्ष्य तो वह राम है जो त्रिगुण से न्यारा है! वह अरूपा है, अलख है, अगम है! सन्तों का यही आधार है! पहले स्थूल गुरु का ध्यान आता है, और वही प्रकाश गुरु के ध्यान में बदल जाता है! पहले फनाईयत (लय) गुरु में होती है और जब प्रकाश रूप में गुरु के दर्शन हो जाते हैं तो अप्रत्यक्ष तौर पर उसे गुरु से

मदद मिलने लगती है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



जहाँ अहंकार है वहाँ न तो ईश्वर का प्रेम मिल सकता है, न संसार के सुख मिल सकते हैं, न सच्चा नाम मिल सकता है! वहाँ न ही भक्ति ठहर सकती है और न ही सच्चा ग्यान! ईश्वर प्राप्ति का कोई भी रास्ता अपनाएं पर यदि सदगुणों को नहीं अपनाएंगे, तो आपको सफलता नहीं मिलेगी, भक्ति नहीं मिलेगी!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



जो सत का संग अपनाता है वही
सत्संगी कहलाता है! सत्संगी तो वह
है जो ईश्वर के गुणों का संग करे, उन्हें
अपनाए, अपने व्यवहार में व्यक्त
करे! क्षमा करना, निंदा न करना,
दीनता और परोपकार जैसे ईश्वरीय
गुण अपना लें और सचमुच उन्हें
अपने व्यवहार में लाएँ, तभी परमार्थ
में उन्नति होगी!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



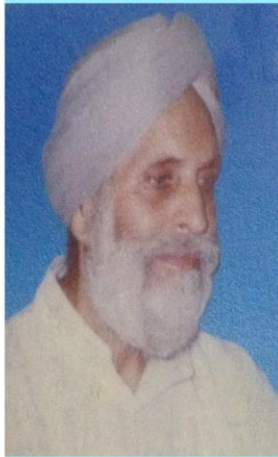
ईश्वर के गुणों को स्मरण करना,
उनकी सराहना, स्तुति करना, उन्हें
ग्रहण करना - ये गुरु या ईश्वर की
पूजा है! धीरे - धीरे दैवी गुण आपके
आचरण में अंकित हो जावें, जो ईश्वर
के गुण है वे ही गुण साधक के हो
जाएँ, जो गुरु का रूप है वही साधक
का हो जाये! दोनों में कोई अंतर न
रहे - यह है वास्तविक गुरु - दर्शन!



जो आत्मा के गुण हैं, परमात्मा के गुण हैं, वे हमारे व्यवहार में होने चाहिए! साधन तो यही है कि हम आत्मा हैं! इस आत्मा को पहचान कर संसार में रहें और अपना नित्य व्यवहार करें!



महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



हमारे यहां का तप यह है कि हम स्व - निरीक्षण करते हुए अपने दोषों को हटाएँ! यह ग्यान है और इन दोषों से निवृत्ति पाने के उपाय करना हमारे यहाँ का तप है! सहनशीलता और संतोष हमारे यहाँ के साधन है! ये गुण तभी आएँगे जब हमारे भीतर में क्षमा का भाव होगा!

--महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब



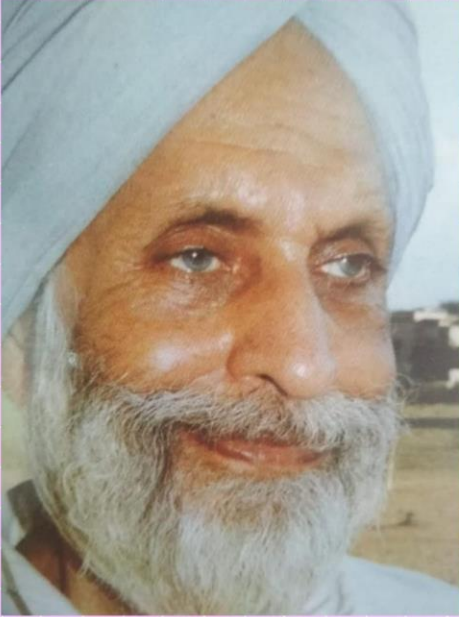
हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें सोचते हैं कि " मैं ही कर्ता हूं"! हमारे मन में जब तक कर्ताभाव और भोक्ताभाव रहेगा तब तक कर्मों का चक्र चलता ही रहेगा और हम भवसागर से कभी भी पार नहीं उतर पावेंगे, मुक्त नहीं होंगे!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



सद्गुरु धारण करने के बाद शिष्यों को कुछ नहीं करना पड़ता है, उन्हें सिर्फ हृदय रूपी बर्तन को साफ़ और खाली रखकर गुरु के पावन चरण कमलों में पूर्ण समर्पण करना पड़ता है! सद्गुरु ऐसे शिष्यों के खाली हृदय में प्रेम एवं सेवा रूपी आत्म ग्यान भरकर उन्हें आत्म-स्थित करा देते हैं! इसके बाद शिष्य आत्म-स्थित होकर परमात्मा से साक्षात्कार करते हुए ब्रह्मा या शून्य हालत (जहाँ पुनर्जन्म होने की स्थिति न रहे यानी परम निर्वाण) की प्राप्ति करता

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी है!



साधना में बैठते समय अपने शरीर को शांत एवं सुखासन में स्थिर करें! विचार करें कि हम परमपिता (या उनके प्रतीक अपने गुरुदेव) के चरणों में बैठे हुए हैं एवं उनकी असीम कृपा - व्रष्टि हम पर हो रही है! यह विचार सतत बना रहे कि ईश्वर कृपा फ्रैज़ या अमृत वृष्टि, जो निरंतर होती रहती है, उससे हम लाभान्वित हो रहे हैं ! अनुभव करें कि यह कृपावृष्टि हमारे शरीर के रोम रोम में प्रवेश करती जा रही है!
--महात्मा डॉ. करतार सिंह जी



गुरु सेवा का सर्वोत्तम रूप सेवा कई प्रकार की होती है! हाथ - पांव की सेवा होती है, धन से सेवा होती है, परन्तु मन की सेवा बहुत ऊँची है! यानि जो भी आपको इष्टदेव कहें, वही हुक्म है! उनकी आग्या का पालन करें! यदि यही बात ध्यान में रखें, गुरु महाराज के जो भी आदेश है - उन्हीं का पालन करते चले जाये, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आत्मा का साक्षात्कार दूर नहीं!
-- महात्मा डॉ. करतार सिंह जी

महाराज



गुरु जो कि ईश्वर का प्रतिनिधि स्वरूप है - उसके चरणों में माथा टेकने का सही मतलब यही है कि सबसे पहले

हम अपने अहंकार को, अपनी बुराइयों को, उनके चरणों में अर्पण कर दें! उनके सद्वचनों की प्रसादी लें, निर्मलता लें, उनके गुणों को अपनाएँ और वैसे ही हम हो जाएँ!



-- महात्मा डॉ. करतार सिंह जी

महाराज

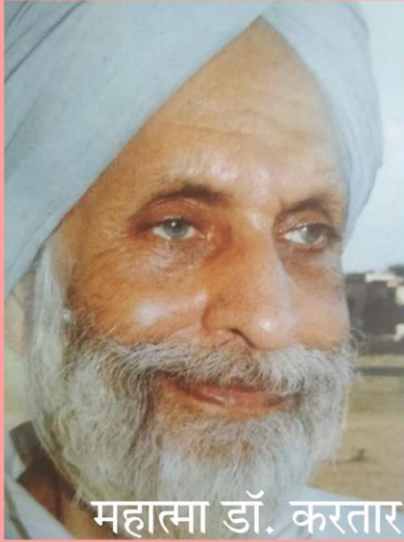


कई लोग आकर कहते हैं कि साहब! आनंद नहीं मिलता! आनंद कैसे मिले? पहले भीतर को मधुर बनाओ, फिर विचार मधुर हों, वाणी मधुर हो, तब हर ओर आनंद ही आनंद होगा! क्रोधित नहीं हों, असंतुलित न हों! भावुक व्यक्ति अपना संतुलन बनाए रहेगा! वह स्वयं भी शांतिमय होगा, आनंदमय होगा और जिससे भी बातचीत करेगा उसको भी शांति, प्रेम एवं मधुरता बांटेगा!

--महात्मा डॉ. करतार सिंह जी

महाराज





महात्मा डॉ. करतार

सिंह जी महाराज

अधिकतर लोगों के विचार में आत्मा का स्थान मानव शरीर में या तो हृदय या मस्तिष्क माना गया है! महात्मा बुद्ध के अनुसार मन के सद्रश्य आत्मा का अस्तित्व भी शरीर के अंग अंग में विराजता है! अतः हमें प्रभु को ढूँढने कहीं नहीं जाना है वरन अपने मन और इन्द्रियों को अंतर्मुखी करके, नियंत्रित करके, हमारे रोम - रोम में दबी पड़ी ईश्वरीय सत्ता को प्रकाशित करना है! यही वास्तविक दर्शन हैं!



अपने भीतर में परमात्मा, अपने इष्ट के प्रति व्याकुलता, अपनाएं! उनसे मिलने की ऐसी तड़प हो जैसी मछली को जल की होती है! आपमें दीनता हो, राजी - ब - रजा हो! जिस हाल में परमात्मा आपको रखें, खुश रहें! अहंकार का त्याग करें, दीनता अपनाएँ! अपने इष्ट के प्रति व्याकुलता उत्पन्न करें! कोई पल उसकी याद से खाली न जाये! तब हम अंतर में उसके दर्शन और उसके प्यार की अनुभूति कर सकेंगे!



कम बोलना चाहिए! जहाँ तक हो
सके बोलना ही नहीं चाहिए! मौन
हमारे लिए एक साधन है! भीतर का
भी मौन हो - सिवाय ईश्वर का नाम
लेने के अन्य कोई बात न हो!
कोशिश करनी चाहिए! धीरे धीरे मन
शांत होता जाएगा! विचार - मुक्त
स्थिति में ही शांति मिलती है और
बिना शांति के आत्मा का साक्षात्कार
नहीं हो सकता है!
महात्मा डॉ. करतार सिंह जी साहब



सतगुरु डॉ. करतार सिंह

जी साहब

अनुभव करने के लिए पहले विचारों
के द्वंद से मुक्त होना होगा! पहला द्वंद
है - स्तुति और निन्दा का! संसार की
स्तुति करोगे तो उसमें फँस जाओगे!
अपने भले कामों की प्रशंसा करोगे
तो माया - मोह जकड़ लेंगे! अतः
पूज्य गुरुदेव के उपदेश के अनुसार
यदि स्तुति करना चाहते हो तो ईश्वर
के गुणों का गान करो! अपनी आत्मा
की स्तुति करो, अपने वास्तविक
स्वरूप को सराहो - ' प्रभु मैं तेरा ही
अंश हूँ! यदि निन्दा ही करना चाहते
हो तो संसार के लोगों की नहीं बल्कि
स्वयं की निन्दा करो!



विचारों से मुक्त होने के लिए दो मुख्य
साधन हैं - प्रायश्चित और पश्चाताप!
मन का स्वभाव है कि वह बार - बार
वही गलतियाँ करता है! ऐसी स्थिति
में प्रभु से क्षमा माँगनी चाहिए!
सर्वप्रथम पश्चाताप करिये, दीनता से
रोकर! एकान्त में बैठकर खूब रोइए,
रो - रो कर अपनी गलतियों पर
पश्चाताप करिये, अपने आप को
अपने ही आँसुओं से भिगो डालिये
और इन्हीं आँसुओं की धार से पापों
को धो डालिए!



जीवन की कला यह है कि हम कमल पुष्प की तरह रहें, सदा
खिले हुए, आनन्दित रहें! चित्त पर किसी प्रकार की छाया ठहरने
न दें! देखना यह है कि अभ्यास करते - करते एकाग्रता होने
लगी, मन ठहरने लगा, परन्तु परमात्मा या गुरु या इष्टदेव का नाम
लेने और उनके स्वरूप का ध्यान करने से हमारा चित्त भी निर्मल
हुआ या नहीं!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



ईश्वर दर्शन हेतु कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है! वह परम शक्ति हम सभी के रोम - रोम में रमी हुई है! परन्तु हमारा मन अस्थिर होने के कारण, बुद्धि विचार द्वंद - युक्त होने के कारण, हमें अपने असली अस्तित्व का ग्यान नहीं होता! सत्संग और सदगुरु के संग का लाभ निरंतर मिलते रहने से यह आभास सम्भव हो जाता है! हमारा मन, बुद्धि, विचार स्थिर होने लगते हैं! जब रास्ते के पर्दे या रुकावटे दूर हो जाती है तो परमात्मा का अंश - आत्मा स्वयं ही प्रकाशित हो जाती है, उसका आभास होने

लगता है!

महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज



ईश्वर के गुण हमारे हृदय में उतरने चाहिए! अपनी मलिनता को धोने की चिंता करें! इसीलिए सत्संग का महत्व है! सत्संग में प्रभु की उपमा गायी जाती है, गुणगान किया जाता है! वहाँ से कोई न कोई बात हृदय में अंकित हो जाती है! गुरु के मुख से जो बात निकलती है, यदि उनके प्रति आपको श्रद्धा है तो उनकी बातें आपके हृदय में अंकित होती चली जाएंगी! यही सत्संग का लाभ है!



इन्द्रियों को वश में लाना होगा, मन के संकल्प - विकल्पों से मुक्त होना होगा! ये मन के विकार खत्म नहीं हो सकते, जब तक कि आपके विचार शुद्ध नहीं होते, आपकी वाणी शुद्ध नहीं होती, आपका व्यवहार शुद्ध नहीं होता! आप एक तरफ तो लड़ाई - झगड़ा करें और संध्या में बैठें और यह चाहें कि मन एकाग्र हो जाये - ये कैसे हो सकता है? लड़ाई - झगड़ा करें, बुराई करें, पाप करें और संध्या के समय मन स्थिर हो जावे, एकाग्र हो जावे, यह कैसे संभव है! वास्तव में शान्ति तभी मिलेगी जब बुद्धि स्थितप्रज्ञ अवस्था को प्राप्त करेगी, ग्यान अवस्था में पहुंचेगी, अनुभव की अवस्था में आत्मा के नज़दीक पहुंचेगी!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



परमात्मा प्रेम स्वरूप है, अप्रयास सबसे प्रेम करें! प्रेम में सेवा भी आ जाती है! प्रेम में सहायता भी आ जाती है, बलिदान भी आ जाता है! परमात्मा का जो स्वरूप है, आत्मा का जो स्वरूप है या आपका जो वास्तविक स्वरूप है - वो प्रेम है! ग्यानी, भक्त दोनों का स्वरूप प्रेम है! जब विचार, मन, बुद्धि और व्यवहार से प्रेम अपने आप विकसित हो जायेगा तब मनुष्य सहज रूप से प्रेम - रूप बन जायेगा!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



चित्त की जो वृत्ति है, उससे जब तक हम मुक्त नहीं होते, शून्य नहीं होते, तब तक जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी! " मैं" का अहंकार जब तक पूर्ण रूप से नहीं निकलेगा, तब तक इष्ट की सच्ची अनुभूति संभव नहीं है! और सब को छोड़कर मात्र खुदी को निःशेष करने की साधना हो तथा जो भी भाव, विचार अथवा परिस्थिति उत्पन्न हो, सबको उसके चरणों में न्योछावर कर दें! ईश्वर की प्रसन्नता तभी मिलेगी जब हम अपने अहंकार को, यानी हम जो ईश्वर से अलहदा हैं अथवा हममें भिन्नता है, प्रथकता है - इसे खत्म कर दें!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



सच्चे जिज्ञासु का एक महान गुण है - कृतज्ञ होना! वो भाग्यशाली है जिसको यह मनुष्य चोला मिला है! हम लोग परमात्मा से मिले इस उपहार के प्रति कृतज्ञ नहीं होते - इसका सदुपयोग नहीं करते! शरीर के साथ इंद्रियाँ भी है! शरीर हमें मिला है कि हम साधना करें, अपनी आत्मा को परमात्मा में विलय कर दें, ताकि हम जन्म-मरण के चक्र से हमेशा - हमेशा के लिये मुक्त हो सकें! परन्तु हम इस दुनियाँ के नश्वर - मायावी आकर्षणों में, इंद्रिय भोगों में, फँस जाते हैं और अपने जीवन के परम लक्ष्य 'ईश्वर प्राप्ति' को भूल जाते हैं! हम इंद्रियों के सुख में इतने फँस जाते हैं कि अपने परम लक्ष्य, परम कर्तव्य को ही भूल जाते हैं! हमें अपने कर्तव्य के प्रति सचेत होना चाहिये, जागरूक रहना चाहिए!
(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



🙏 परमपूज्य समर्थ सदगुरु चच्चा
जी महाराज की अमृत वाणी 🙏

पूजा

के पीछे चन्द मिनट बैठे रहना उचित
है। इसके विषय मे आपने फ़रमाया
--" पूजा मे तो मूसलाधार वर्षा के
समान -आत्म धार उतरती है,आई
और गयी, विरले ठौर ठहरती है।जब
पूजा समाप्त हो चुकती है, मन्द मन्द
धार जो उठती है उससे सच्ची
आत्मिक उन्नति होती है।वह जम
जाती है स्थिर रहती है। इससे
आत्मिक पोषण होता है। 🙏 जय
गुरुदेव दया करिये 🙏



शास्त्रों में गुरु तत्व को ईश्वर तत्व से
भी बढ़कर बताया गया है. भगवत
तत्व जगन्नियता है - कर्मों के अनुसार
ही जीव को भोग देता है. परन्तु
गुरु-तत्व असीम दया और करुणा के
सागर हैं. गुरु कृपा अहैतुकी है,
इसलिए शक्ति भी अचिन्त्य है.

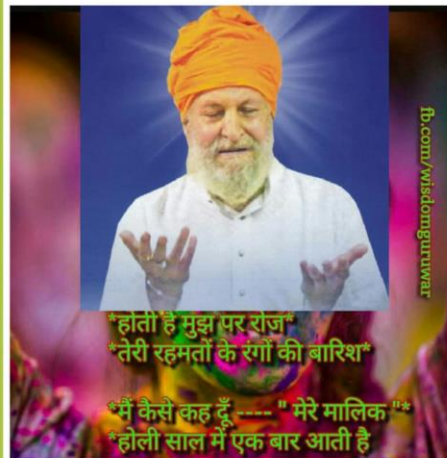


परम पूज्य श्री देवराहा बाबा



परमात्मा की कृपा हर एक चीज़ पर हर समय हो रही है और एक - सी हो रही है! फर्क सिर्फ महसूस और गैर - महसूस का है! जिसने अपने बर्तन यानी मन को साफ़ कर लिया है और कोई अपवित्रता उसमें नहीं है, उस पर उसका असर ज़्यादा है और जिसके अंदर मैल भरा हुआ है और उसके कारण फ़ैज़ को क़बूल नहीं करता उस पर उसका असर या तो बिल्कुल नहीं या कम है! सूरज की रोशनी सब पर एक सी पड़ती है और वह सबकी जान है! लेकिन उसका असर सब पर अलग-अलग है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



ओउम के मायने शास्त्रों में उस शक्ति से हैं जो चारों जगत - पिण्ड, ब्रह्माण्ड, पारब्रह्म और दयाल देश, की स्वामी है, जिसमें उस आदि शक्ति के तीनों गुण - पैदा करने वाला, पालन करने वाला, प्यार करने और आनन्द देने वाला, हैं. यह शब्द सब सिफ़ात का मजमा (गुणों का भण्डार) है. जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, और तुरीया हर हालत में मौजूद हैं. इस शब्द के अन्दर भी सभी शक्तियाँ मौजूद हैं. इसके उच्चारण करने का मतलब यही है कि उस शक्ति का होना हम अपने घट में महसूस करें, हमको ज्ञान हो और आहिस्ता-आहिस्ता उससे मिलकर एक हो जायें. यह परमात्मा में मिल जाने का महामंत्र है.



तकलीफें हमारे खुदा (प्रभु) का निमंत्रण है, जुबा (जिब्हा) पर शिकायत का लफ़्ज (शब्द) भी नहीं आना चाहिए! मज़बूरी से भोगना भी कोई भोगना है! उसे खुशी से भोगना चाहिए और अपने प्रीतम का तौहफ़ा (उपहार) समझना चाहिए! उसमें वही आनंद लेना चाहिए जो आनंद अपने दुनियावी (सांसारिक) माशूक (प्रियतम) के लिए, दुनियावी सुख के लिए लेते हैं!

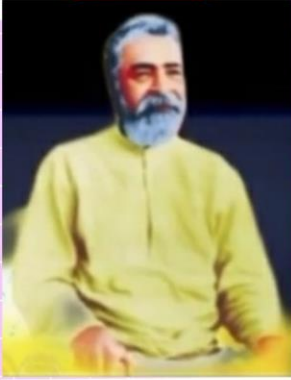
महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज.



अपना पुरुषार्थ और कोशिश और गुरु का बताया हुआ तरीका मन को हल्का करता है जो आत्मा को दबाए हुए है! गुरु की सौहबत आत्मा को शक्ति देती है जो दबी हुई है!

आहिस्ता आहिस्ता कुछ दिनों के बाद देवसुर संग्राम या संघर्ष जारी हो जाता है और अगर गुरु का सत्संग मिलता रहा और अभ्यास जारी रहा तो आत्मा ऊपर आ जाती है!

महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी
महाराज



हमारे यहाँ गुरु कृपा पर अधिक भरोसा किया जाता है, यह प्रेम का मत है! गुरु सदा ईश्वर प्रेम के आनंद में मग्न रहते हैं! यदि आपका उनके साथ प्रेम होगा तो उसके साथ - साथ उनकी आत्मा का प्रकाश भी आपके पास पहुँच जाएगा! जब गुरु अपना दिल ईश्वर प्रेम से भर लेता है और लगातार चौबीसों घंटे भरता ही रहता है तो वह भीतर से इतना लबालब हो जाता है कि छलकने लगता है और जो वातावरण उसके चारों तरफ़ होता है उसे तर कर देता है जिसका प्रभाव वहाँ बैठे लोगों पर पड़ता है और वे भी शान्ति तथा ईश्वर प्रेम का अनुभव करते हैं!



अहं को दीनता में बदल दो! इससे मन का मान घटता जाता है और ईश्वर प्रेम बढ़ता जाता है! अपने आपको दुनियाँ का सेवक समझो! सबमें ईश्वर का रूप देखो! इससे दीनता आती है! मन की हालत को देखते चलो, और गुरु की कृपा, उनके प्रकाश की धार (फ़ैज़) का अपने ऊपर अनुभव करते रहो! यही सत्संग है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



परमात्मा प्रेम स्वरूप हैं, अप्रयास सबसे प्रेम करें! प्रेम में सेवा भी आ जाती है! प्रेम में सहायता भी आ जाती है, बलिदान भी आ जाता है! परमात्मा का जो स्वरूप है, आत्मा का जो स्वरूप है या आपका जो वास्तविक स्वरूप है - वो प्रेम है! ग्यानी, भक्त दोनों का स्वरूप प्रेम है! जब विचार, मन, बुद्धि और व्यवहार से प्रेम अपने आप विकसित हो जायेगा तब मनुष्य सहज रूप से प्रेम - रूप बन जायेगा!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ! ख्यालों पर क्राबू पाने की कोशिश करो! बुद्धि को सांसारिक बातों से हटाकर संतो की वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ! मन की इच्छाओं पर विजय पाओ और मन को गुरु के ध्यान में लगाओ! इंद्रियों का आचार ठीक करो! कोशिश करो कि इंद्रियाँ सांसारिक विषष्टा रूपी पदार्थों की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें! यही रहनी सहनी को ठीक करना है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



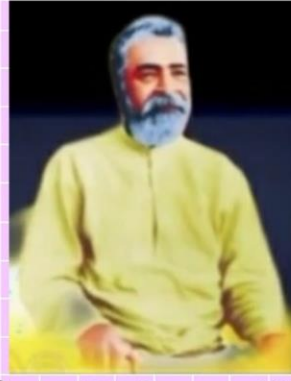
इन्द्रियों को वश में लाना होगा, मन के संकल्प - विकल्पों से मुक्त होना होगा! ये मन के विकार खत्म नहीं हो सकते, जब तक कि आपके विचार शुद्ध नहीं होते, आपकी वाणी शुद्ध नहीं होती, आपका व्यवहार शुद्ध नहीं होता! आप एक तरफ तो लड़ाई - झगड़ा करें और संध्या में बैठें और यह चाहें कि मन एकाग्र हो जाये - ये कैसे हो सकता है? लड़ाई - झगड़ा करें, बुराई करें, पाप करें और संध्या के समय मन स्थिर हो जावे, एकाग्र हो जावे, यह कैसे संभव है! वास्तव में शान्ति तभी मिलेगी जब बुद्धि स्थितप्रज्ञ अवस्था को प्राप्त करेगी, ग्यान अवस्था में पहुंचेगी, अनुभव की अवस्था में आत्मा के नज़दीक पहुंचेगी!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



मन को काबू में लाना बहुत ही मुश्किल काम है, बल्कि दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम है! वैराग्य और अभ्यास दो ही इसके साधन हैं! यह निश्चय हो जाना कि ये चीज़ें क्षणभंगुर हैं, यानी तब्दील होने वाली हैं, और उनमें हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अलहदगी अख्तियार कर लेनी चाहिए! यही वैराग्य है! परमात्मा का नाम दिल की ज़बान से लेते रहना अभ्यास है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



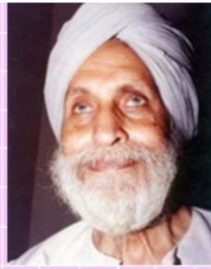
जब - जब मौका मिले, सन्तों, गुरुजनों की सेवा करो! उनको प्रसन्न करो! उनके उपदेशों को हित - चित से सुनो और उनपर अमल करने की कोशिश करो! हमेशा पूरी कामयाबी होगी! कभी निराशा नहीं होगी! यही ईश्वर - प्राप्ति का सच्चा, सीधा और सहज रास्ता है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)



चित्त की जो वृत्ति है, उससे जब तक हम मुक्त नहीं होते, शून्य नहीं होते, तब तक जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी! " मैं" का अहंकार जब तक पूर्ण रूप से नहीं निकलेगा, तब तक इष्ट की सच्ची अनुभूति संभव नहीं है! और सब को छोड़कर मात्र खुदी को निःशेष करने की साधना हो तथा जो भी भाव, विचार अथवा परिस्थिति उत्पन्न हो, सबको उसके चरणों में न्योछावर कर दें! ईश्वर की प्रसन्नता तभी मिलेगी जब हम अपने अहंकार को, यानी हम जो ईश्वर से अलहदा हैं अथवा हममें भिन्नता है, प्रथकता है - इसे खत्म कर दें!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



परमात्मा की कृपा, प्रेम ब्रष्टि, प्रतिक्षण सब पर एक जैसी पड़ती है! हमें केवल इस ब्रष्टि को ग्रहण करने का ढंग सीखना है! यह बड़ा सरल है! सुख आसन पर बैठ जाइए, या जैसे भी आपको आराम मिले ज़मीन पर बैठें, कुर्सी पर या खाट पर बैठें, यह आपकी इच्छा है! शरीर ढीला हो जैसे खूटी पर कपड़ा टंगा होता है, अपना कोई बल न हो! इस ख्याल को लेकर बैठें कि ईश्वर की कृपा बरस रही है! अधिक से अधिक पाँच मिनट लगेगे कि आपको इस ब्रष्टि की अनुभूति होने लगेगी! दो, चार, दस दिन, निरंतर - नियमित यह अभ्यास करते रहें तो ऐसा अनुभव होगा कि आपका शरीर बाहर और भीतर से कपड़े की तरह भीग गया हो! यह अभ्यास बच्चे से लेकर बूढ़े तक प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है! समर्पण का श्री गणेश यहीं से होता है! धीरे - धीरे परमात्मा की उपस्थिति का भान होने लगता है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



सच्चे जिज्ञासु का एक महान गुण है - कृतज्ञ होना! वो भाग्यशाली है जिसको यह मनुष्य चोला मिला है! हम लोग परमात्मा से मिले इस उपहार के प्रति कृतज्ञ नहीं होते - इसका सदुपयोग नहीं करते! शरीर के साथ इंद्रियाँ भी है! शरीर हमें मिला है कि हम साधना करें, अपनी आत्मा को परमात्मा में विलय कर दें, ताकि हम जन्म-मरण के चक्र से हमेशा - हमेशा के लिये मुक्त हो सकें! परन्तु हम इस दुनियाँ के नश्वर - मायावी आकर्षणों में, इंद्रिय भोगों में, फँस जाते हैं और अपने जीवन के परम लक्ष्य 'ईश्वर प्राप्ति' को भूल जाते हैं! हम इन्द्रियों के सुख में इतने फँस जाते हैं कि अपने परम लक्ष्य, परम कर्तव्य को ही भूल जाते हैं! हमें अपने कर्तव्य के प्रति सचेत होना चाहिये, जागरूक रहना चाहिए!
(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



जीवन की कला यह है कि हम कमल पुष्प की तरह रहें, सदा खिले हुए, आनन्दित रहें! चित्त पर किसी प्रकार की छाया ठहरने न दें! देखना यह है कि अभ्यास करते - करते एकाग्रता होने लगी, मन ठहरने लगा, परन्तु परमात्मा या गुरु या इष्टदेव का नाम लेने और उनके स्वरूप का ध्यान करने से हमारा चित्त भी निर्मल हुआ या नहीं!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



मनुष्य को ऐसे जीवन व्यतीत करना चाहिये जैसे नदी का पानी! वह निरंतर बहता रहता है! उसी प्रकार हमें जीना चाहिये - अर्थात् जो पानी बह गया उसके साथ उससे कोई आशा नहीं रखनी चाहिए! "ब्रह्मग्यानी निर्मल ते निर्मला, जैसे

मैल न लागे जला!" इंसान को वर्तमान में जीना चाहिए! जो गुज़र चुका है उसके प्रति खेद नहीं करना चाहिए, कोई आसक्ति नहीं होनी चाहिए! भविष्य के प्रति स्वप्न नहीं देखने चाहिए! हमारे शास्त्र भी यही कहते हैं कि मोहग्रस्त नहीं होना है! अतीत का खेद नहीं करें, भविष्य की चिंता न करें, वर्तमान को अधिकाधिक सुन्दर, ईश्वरमयी बनाने का प्रयास करें! सफलता अवश्य मिलेगी!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



सदगुणों को अपनाएँ, जब तक सदगुणों को नहीं अपनाएंगे सदगति नहीं आएगी, मन में कोमलता नहीं आएगी! कोमल मन स्थिर हो सकता है, स्थूल मन स्थिर नहीं होता! मन कोमल होकर ही आत्म - देश में प्रवेश पा सकता है, उससे पहले नहीं! यह अधिकारी तभी हो सकता है, जब इसमें कोमलता आ जाती है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



गुरु चरणों में शत - शत नमन

वास्तविक बलिदान जो है वो अपने अहंकार का है! "मैं और " मेरापन " ! यह अहंकार हमें अपने प्रीतम से, परमात्मा से, दूर करता है! एक क्षण में उस परमात्मा से तदरूपता हो सकती है, उस महान सागर में आप विलय हो सकते हैं, यदि आप अपने अहंकार की आहुति भगवान के चरणों में दे दें! कहना बड़ा सरल है, परन्तु करना कठिन है! इस कठिनाई को दूर करने का जो उपाय हम करते हैं, उसी का नाम साधना है, अभ्यास है!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



सच्चे जिज्ञासु का एक महान गुण है - कृतज्ञ होना! वो भाग्यशाली है जिसको यह मनुष्य चोला मिला है! हम लोग परमात्मा से मिले इस उपहार के प्रति कृतज्ञ नहीं होते - इसका सदुपयोग नहीं करते! शरीर के साथ इंद्रियाँ भी है! शरीर हमें मिला है कि हम साधना करें, अपनी आत्मा को परमात्मा में विलय कर दें, ताकि हम जन्म-मरण के चक्कर से हमेशा - हमेशा के लिये मुक्त हो सकें! परन्तु हम इस दुनियाँ के नश्वर - मायावी आकर्षणों में, इंद्रिय भोगों में, फँस जाते हैं और अपने जीवन के परम लक्ष्य 'ईश्वर प्राप्ति' को भूल जाते हैं! हम इन्द्रियों के सुख में इतने फँस जाते हैं कि अपने परम लक्ष्य, परम कर्तव्य को ही भूल जाते हैं! हमें अपने कर्तव्य के प्रति सचेत होना चाहिये, जागरुक रहना चाहिए! (ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



सच्चे जिज्ञासु का एक महान गुण है - कृतज्ञ होना! वो भाग्यशाली है जिसको यह मनुष्य चोला मिला है! हम लोग परमात्मा से मिले इस उपहार के प्रति कृतज्ञ नहीं होते - इसका सदुपयोग नहीं करते! शरीर के साथ इंद्रियाँ भी है! शरीर हमें मिला है कि हम साधना करें, अपनी आत्मा को परमात्मा में विलय कर दें, ताकि हम जन्म-मरण के चक्कर से हमेशा - हमेशा के लिये मुक्त हो सकें! परन्तु हम इस दुनियाँ के नश्वर - मायावी आकर्षणों में, इंद्रिय भोगों में, फँस जाते हैं और अपने जीवन के परम लक्ष्य 'ईश्वर प्राप्ति' को भूल जाते हैं! हम इन्द्रियों के सुख में इतने फँस जाते हैं कि अपने परम लक्ष्य, परम कर्तव्य को ही भूल जाते हैं! हमें अपने कर्तव्य के प्रति सचेत होना चाहिये, जागरुक रहना चाहिए! (ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



ईश्वर के गुण हमारे हृदय में उतरने चाहिए! अपनी मलिनता को धोने की चिंता करें! इसीलिए सत्संग का महत्व है! सत्संग में प्रभु की उपमा गायी जाती है, गुणगान किया जाता है! वहाँ से कोई न कोई बात हृदय में अंकित हो जाती है! गुरु के मुख से जो बात निकलती है, यदि उनके प्रति आपको श्रद्धा है तो उनकी बातें आपके हृदय में अंकित होती चली जाएंगी! यही सत्संग का लाभ है!



जीवन की कला यह है कि हम कमल पुष्प की तरह रहें, सदा खिले हुए, आनन्दित रहें! चित्त पर किसी प्रकार की छाया ठहरने न दें! देखना यह है कि अभ्यास करते - करते एकाग्रता होने लगी, मन ठहरने लगा, परन्तु परमात्मा या गुरु या इष्टदेव का नाम लेने और उनके स्वरूप का ध्यान करने से हमारा चित्त भी निर्मल हुआ या नहीं!

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. करतार सिंह जी महाराज)



संत के पास बैठकर आनन्द का अनुभव होता है! अगर
 सौभाग्य से ऐसा कोई वक्त का पूरा संत मिल जाय वही गुरु है!
 वह तुम्हें भवसागर से पार करने आया है! उससे प्रेम करो!
 असली सत्संग यह है कि सदगुरु की वाणी को याद रखे और
 उनके आदेशों पर चलने का प्रयत्न करे!



गुरु चरणों में शत - शत नमन

सन्तों की वाणी है " गुरु ईश्वर का
 पूर्ण स्वरूप है. " गुरु नाम-रूप युक्त
 होता है तथा उससे मुक्त और परे भी
 वही है. शरीर की दृष्टि से वह
 नाम-रूप युक्त है, किन्तु आत्मा की
 दृष्टि से वह नाम-रूप से मुक्त एवं परे
 है. अतः नाम-रूप का आश्रय लेकर
 नाम-रूप से मुक्त हो जाना ही सच्चा
 गुरु प्रेम है. तब सारा जगत ही
 परमात्मा का रूप बन जाता है.

(शांति की खोज में)



1. हम जैसा सोचते हैं, बाहर की दुनियाँ बिल्कुल वैसी ही है. हमारे विचार ही चीज़ों को सुन्दर और बदसूरत बनाते हैं. सम्पूर्ण संसार हमारे अन्दर समाया हुआ है, बस ज़रूरत है तो चीज़ों को सही रोशनी में रखकर देखने की.

2. ब्रह्माण्ड की सभी शक्तियाँ हमारे अंदर है. यह हम ही है जिन्होंने अपने आंखों के सामने हाथ रखा है और रोते हुए कहा है कि अंधेरा है.
-- स्वामी विवेकानंद.



पीर से उल्फत हो मुझको और बनूँ

उनकी मुराद

'राम' के 'श्रीकृष्ण' की अनुपम दया
के वास्ते

आन्तरिक सत्संग में बैठ कर हमको चाहिए कि दिल को हाज़िर रखकर अपने मनोआकाश को सतगुरु के प्रेम की धारों से संतृप्त करें और सुरत को ऊपर उठने दें. इस तरह अपनी सुरत गुरु की तवज्जह की धार से पूर्णतया मिला दें तो इसी का नाम सच्चे मायनों में योग है - बाकि सब अभ्यास योग साधन है जिनको

सत्संग के समय करने की मुख्यता
पूज्य डॉ. बी. के. सक्सेना
नहीं है.

जी